यू.जी.सी.
मॉडल
पाठ्यचर्या

हिन्दी

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली
२००१

© विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

मुद्रित – 2001
1,000 प्रतियाँ

सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नयी दिल्ली–110002, के लिए श्री प्रेम वर्मा, वरिष्ठ मुद्रण अधिकारी द्वारा प्रकाशित एवं जीवन आफसेट प्रेस, 9936, सराय रोहिल्ला, नई दिल्ली–110005 द्वारा मुद्रित।
दूरभाष : 5761394, 4958815, 9811220873.

प्राक्कथन

पाठ्यचर्या का नवीकरण और उसे अद्यतन बनाए रखना किसी भी स्पंदनशील विश्वविद्यालय तंत्र का अत्यावश्यक अंग है। पाठ्यचर्या को गत्यात्मक होना चाहिए जिस हेतु, उसे अद्यतन बनाए रखने के प्रमुख उद्देश्य से, संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा उसमें समय–समय पर आवश्यक परिवर्तन एवं परिवर्धन करते रहना चाहिए और साथ ही उसमें ऐसी सामग्री अन्तर्धारित होनी चाहिए जिसके आधार पर संबंधित विषय में हो रहे ज्ञान के तीव्र विकास के साथ कदम मिलाकर चला जा सके। छात्र–समुदाय को अद्यतन शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए पाठ्यचर्या में संशोधन के कार्य को एक अनवरत प्रक्रिया के रूप में अपनाया जाना चाहिए।

कुछ विश्वविद्यालयों को छोड़कर, अनेक ऐसे विश्वविद्यालय हैं जहाँ वर्षों से इस दिशा में कोई चेष्टा नहीं की गई और जिनमें आज भी वर्षों या दशकों पुरानी पाठ्यचर्या प्रचलित है और उसका अनुसरण कर पढ़ाया जा रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस निश्चेष्टता के कारणों पर तो विचार नहीं किया, परन्तु पाठ्यचर्या–संशोधन की आवश्यकता को महसूस करते हुए तथा उच्च शिक्षा के स्तर को बनाए रखने और उसके समन्वयन से संबंधित अपने अधिदेश की प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए इस परिवर्तन को लाने में अग्रगामी भूमिका अदा करने का निर्णय लिया ताकि विश्वविद्यालय पाठ्यचर्या को अविलंब अद्यतन कर संपूर्ण देश में स्तरीय शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके।

प्रत्येक विषय के लिए पाठ्यचर्या विकास समिति का गठन किया गया जिसका संयोजक उसका केंद्रक (नोडल) व्यक्ति था। इस समिति में विश्वविद्यालयों से लिए गए पाँच विषय–विशेषज्ञों के अतिरिक्त, विभिन्न उप–विषयों के विशेषज्ञ भी शामिल थे जिन्होंने सम्मानित सहयोजित सदस्यों के रूप में समिति की बैठकों में भाग लिया। ये विशेषज्ञ आवश्यकतानुसार समय–समय पर बदलते रहे। इस प्रकार, इन समितियों में अनेक विशेषज्ञ शामिल थे और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को अद्यतन मॉडल पाठ्यचर्या प्रस्तुत किए जाने से पहले उन्होंने अनेक बैठकों में भाग लिया।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और इसके अध्यक्ष के रूप में, मैं उन केंद्रक (नोडल) व्यक्तियों तथा विभिन्न विषयों और उनके उप–विषयों के विभिन्न स्थायी एवं सहयोजित सदस्यों का आभारी हूँ जिन्होंने 18 महीने की रिकार्ड अवधि में 32 विषयों में यू.जी.सी. मॉडल पाठ्यचर्या तैयार करने के लिए पूर्ण निष्ठा से गंभीरतापूर्वक कार्य किया।

हमारे समस्त अकादमिक समुदाय के सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं था। हम केवल यही आशा कर सकते हैं कि उनकी और विश्वविद्यालय समुदाय तथा भारतीय समाज की आकांक्षाएं पूरी हों।

यू.जी.सी. मॉडल पाठ्यचर्या को तैयार करते समय अनेक बातों को ध्यान में रखा गया है, जैसे कुछ विश्वविद्यालयों में प्रचलित विद्यमान पाठ्यचर्या की कमियों, त्रुटियों/दुर्बलताओं का परिहार करना; संबंधित विषय में हुए नूतन विकास से सुसंगतता बनाए रखने में सक्षम एक नवीन मॉडल पाठ्यचर्या विकसित करना; नवप्रवर्तनात्मक विचारों को सम्मिलित करना; बहुविषयात्मक रूपरेखा प्रदान करना; तथा एक लचीले एवं स्व–प्रयास के दृष्टिकोण के साथ–साथ संबंधित विषय के सीमांत क्षेत्रों में विकसित ज्ञान के शिक्षण के लिए नये पर्चों को शामिल करने की गुंजाइश रखना।

मॉडल पाठ्यचर्या में सम्मलित सिफारिशें देश के विभिन्न भागों से आमंत्रित विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गई हैं। उन्होंने भारतीय अकादमिक संदर्भ में अध्यापन की व्यावहारिक आवश्यकताओं को, अपने विषयों के क्षेत्र में ज्ञान प्रदान करने हेतु, उच्च स्तरों के अनुपालन की आवश्यकता के साथ जोड़ने का प्रयास किया है। विश्वस्तरीय ज्ञान के लक्ष्यों एवं मानदण्डों के साथ भारतीय विरासत के गौरव तथा भारतीय योगदान के संदर्भानुकूल संयोजन का उद्देश्य भी रखा गया

है।

सम्प्रति, समस्त ज्ञान अंतःशास्त्रीय है। इसका पूरा ध्यान रखते हुए विश्वविद्यालयों के लिए लचीले और अन्योन्यक्रियात्मक मॉडल प्रस्तुत किए गए हैं ताकि वे जैसा चाहें उनका आगे और विस्तार कर सकें। प्रत्येक संस्था को समान स्तर के पाठ्यक्रमों के लिए एकरूप ढाँचा तैयार करना होगा ताकि विषयों और संकायों के बीच प्रभावी अन्योन्यप्रक्रिया संभव हो सके। पूरे देश में यह प्रवृत्ति बन रही है कि अब वार्षिक पद्धति के स्थान पर सेमेस्टर पद्धति लागू होनी चाहिए और अंकों के स्थान पर क्रेडिट देने की पद्धति अपनाई जानी चाहिए। माड्यूलर रूपरेखा में भी लोगों की रुचि स्पष्ट रूप से बढ़ रही है।

इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए सिफारिशों में उन संस्थाओं के लिए व्यवस्था की गई है जो तत्काल आमूल संरचनात्मक सुधार करने की स्थिति में नहीं हैं। किसी भी देश में, विशेषतः भारत जैसे विशाल एवं विविधतापूर्ण देश में, विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए संस्थाओं को पर्याप्त स्वायत्तता एवं स्वतंत्रता प्रदान की जानी चाहिए। पाठ्यचर्या विकास समितियों की सिफारिशों में भी इसी बात पर जोर दिया गया है। हमारा सदैव यही प्रयास रहा है कि समस्त भारतीय अकादमिक समुदाय में विनिमय, गतिशीलता तथा मुक्त संवाद के लिए एक व्यापक सामान्य ढाँचा उपलब्ध कराया जाए। ये सिफारिशें मुक्त एवं सतत सुधार करने की भावना से की गई हैं।

समाज की जरूरतों और अपेक्षाओं को पूरा करने तथा शिक्षा की गुणवत्ता एवं स्तर को समुन्नत करने के लिए पाठ्यचर्या को सतत रूप से अद्यतन और उसकी पुनः संरचना करते रहना चाहिए। तदनुसार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पाठ्यचर्या विकास समितियों का गठन किया। यदि आप इस संबंध में कोई स्पष्टीकरण चाहते हों तो आप विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की उप–सचिव तथा पाठ्यचर्या विकास समितियों की समन्वयक डॉ. (श्रीमती) रेणु बत्रा से संपर्क कर सकते हैं जो संबंधित विषय के "नोडल" व्यक्ति से सम्यक् परामर्श करने के पश्चात् आपको उत्तर देंगी।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग इस मॉडल पाठ्यचर्या को सभी विश्वविद्यालयों के माननीय कुल सचिवों (रजिस्ट्रारों) को इस अनुरोध के साथ अग्रेषित कर रहा है कि वे इस मॉडल पाठ्यचर्या की प्रतियाँ करा कर संबंधित संकाय–अध्यक्षों और विभागाध्यक्षों को अग्रेषित करें और उनसे यह अनुरोध करें कि वे अपनी पाठ्यचर्या को अद्यतन करने के लिए शीघ्र कार्रवाई शुरू करें। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की मॉडल पाठ्यचर्या विश्वविद्यालय के कुल सचिवों को इन विकल्पों के साथ प्रस्तुत की जा रही है कि वे या तो इसे पूर्णतः या आवश्यक संशोधन करने के बाद या आवश्यक विलोपन/परिवर्धन सहित या किसी भी प्रकार का परिवर्तन, जिसे विश्वविद्यालय उचित समझे, करने के बाद अंगीकार करें। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की पाठ्यचर्या केवल आधार के रूप में प्रयोग करने तथा पाठ्यचर्या को शीघ्र अद्यतन करने की समस्त कार्रवाई को सुकर बनाने के लिए विश्वविद्यालयों को उपलब्ध कराई गई है।

मैं विश्वविद्यालयों के माननीय कुलपतियों तथा कुल सचिवों और सम्माननीय संकाय–अध्यक्षों, विभागाध्यक्षों, संकाय–सदस्यों और पाठ्य समितियों तथा विद्यापरिषद् के सदस्यों से यह अनुरोध करूंगा कि वे उनको उपलब्ध कराई गई मॉडल पाठ्यचर्या के आधार पर 32 विषयों (प्रत्येक) की पाठ्यचर्या को अद्यतन करें। पाठ्यचर्या को शीघ्र एवं अवश्यमेव अद्यतन करना होगा। मैं विश्वविद्यालयों के अकादमिक प्रशासन से भी अनुरोध करूंगा कि वे इस संबंध में तत्काल कार्रवाई करें ताकि विश्वविद्यालय द्वारा जुलाई, 2002 तक अद्यतन पाठ्यचर्या को अपनाया जा सके।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का माननीय कुल सचिवों से अनुरोध है कि वे इस बात की पुष्टि करें कि उक्त समयबद्ध कार्य पूरा कर दिया गया है और वे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को प्रत्येक विषय में विश्वविद्यालय की अद्यतन पाठ्यचर्या 31 जुलाई, 2002 तक अवश्य भेज दें। ऐसा अवश्य किया जाना चाहिए। यह कार्य समय से करना होगा। यदि ऐसा नहीं किया गया तो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को संबंधित विश्वविद्यालय के विरुद्ध उपयुक्त अप्रिय कार्रवाई करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग आशा करता है कि उच्च शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने हेतु स्तरों में सुधार करने के लिए आप इस संयुक्त कार्य में सक्रिय भाग लेंगे।

हरि गौतम

एमएस (सर्जरी) एफआरसीएस (एडिन.) एफआरसीएस (इंग.)
एफएएमएस एफएसीएस एफआईसीएस एफआईएसीएस डीएससी (मानद)
अध्यक्ष

दिसम्बर, 2001

दो शब्द

समाज के स्वस्थ विकास एवं व्यक्ति के सुसंस्कार के लिए शिक्षा अनिवार्य है। ज्ञान–विज्ञान की अवाप्ति का यही सशक्त माध्यम है। आत्मविकास की सीढ़ी और मूल्यों की संरक्षिका भी यही है। इस शिक्षा की प्राप्ति का समुचित तथा समीचीन माध्यम वैज्ञानिक एवं विकासात्मक पाठ्यक्रम ही है। इससे समस्त शैक्षिक उद्देश्यों की संप्राप्ति होती है। इसलिए वरिष्ठ प्रशासनिक तथा शिक्षाविद् बदलते समय के साथ विविध पाठ्यक्रमों में परिवर्तन के आकांक्षी होते हैं, जिससे उभड़ती–उमड़ती सामाजिक चुनौतियों का सामना किया जा सके। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष **डॉ. हरि गौतम** सामाजिक–शैक्षिक परिवर्तनों के प्रबल पक्षधर हैं। विभिन्न पाठ्यक्रमों के विकासात्मक पुनर्निर्माण की उनकी संकल्पना इसी की एक सशक्त कड़ी है। अतः विभिन्न पाठ्यक्रमों के साथ हिन्दी के पाठ्यक्रम की उनकी विशेष चिंता सहज स्वाभाविक है। इसी संदर्भ में नोडल पर्सन (समन्वयक) को उनका दिनांक ३१ अगस्त, २००० का एक निर्देशात्मक पत्र मिला, जिसमें पाठ्यक्रम (हिन्दी) के कतिपय विचार बिन्दु सन्निहित थे। इसके आधार पर 'हिन्दी पाठ्यक्रम विकास समिति' का गठन हुआ, जिसमें विषय के विशेषज्ञ विद्वानों के रूप में – डॉ. तारकनाथ बाली (दिल्ली), डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित (लखनऊ), डॉ. उमाशंकर उपाध्याय (पुणे), डॉ. जयप्रकाश (चंडीगढ़), डॉ. ए. अरविंदाक्षन (कोचीन), डॉ. रमेश गौतम (दिल्ली), डॉ. अवधेश नारायण मिश्र (वाराणसी) चयनित हुए। इसे आयोग के अध्यक्ष की स्वीकृति मिली, इसके लिए आभारी हूँ। आयोग की शिक्षा अधिकारी डॉ. उर्मिला देवी इस समिति की सदस्य सचिव हैं।

समिति की पूरी कोशिश रही है कि हिन्दी पाठ्यक्रम की विकासात्मक प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया जा सके। उसकी एकांगिकता, क्षेत्रीयता, रूढ़िवादिता तथा आनुपातिक असंतुलन को तोड़कर उसे अद्यतन, प्रयोजनमूलक, योजक, लचीला, बहु–अनुशासनात्मक तथा मूल्याधारित बनाया जा सके। इसके साथ ही इसका स्वरूप राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बन सके। इसकी कतिपय विशेषताएँ निम्नांकित हैं :

१. हिन्दी व्यापक एवं संपन्न भाषा है। अब इसका क्षेत्र न केवल अखिल भारतीय है अपितु अंतरराष्ट्रीयोन्मुखी भी। अतः पाठ्यक्रम में जहाँ बीज पाठचर्या में कतिपय अंश अनिवार्य रखे गये हैं, वहीं कुछ अंश विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों के ऊपर छोड़ा गया है जिसे वे स्थानीय विशेषताओं के साथ जोड़कर अध्ययन का आधार बना सकें। समवाय रूप में पाठ्यक्रम को समन्वित–सम्पूर्ण बनाने की पूरी चेष्टा की गई है।

२. पाठ्यक्रम साहित्यिक ज्ञान एवं सांस्कृतिक अवबोधन की चेतना से ओतप्रोत है।

३. इसमें साहित्य एवं भाषा के लोकपक्ष से लेकर वैश्विक स्तर तक के अवदानों को समाविष्ट करने का प्रयास है।

४. साहित्य की अखिल भारतीय संकल्पना को साकार बनाने की चेष्टा है।

५. साहित्याध्ययन को जनसंचार माध्यमों, नयी तकनीकों से जोड़कर पाठ्यकम को अत्याधुनिक तथा प्रासंगिक भी बनाने की कोशिश की गई है।

६. भाषा के क्षेत्रीय/प्रादेशिक, प्रायोगिक संदर्भ को भी समाविष्ट किया गया है।

७. पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय, मानवीय, भारतीय मूल्यों तथा श्रम संस्कृति के साथ जोड़कर सार्थक बनाने की भी कोशिश की गई है।

पाठ्यक्रम विकास समिति (हिन्दी) इस नवनिर्मित पाठ्यक्रम को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को समर्पित करते हुए हर्ष एवं संतोष का अनुभव कर रही है।

डॉ० शम्भूनाथ पाण्डेय
समन्वयक

कार्यवृत्त

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार हिन्दी पाठ्यक्रम समिति का गठन हुआ। इसकी बैठकें निम्नलिखित तिथियों में आयोजित की गयीं—२८—२६ नवम्बर, २०००; १८—१६ दिसम्बर, २०००; ३०—३१ जनवरी एवं १ फरवरी, २००१; एवं ५—६ मार्च, २००१ इन बैठकों में निम्नांकित सदस्यों ने सहभागिता की :

१.	**डॉ. शम्भूनाथ पाण्डेय**	**समन्वयक**
२.	**डॉ. तारकनाथ बाली**	**सदस्य**
३.	**डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित**	**सदस्य**
४.	**डॉ. उमाशंकर उपाध्याय**	**सदस्य**
५.	**डॉ. जयप्रकाश**	**सदस्य**
६.	**डॉ. ए. अरविंदाक्षन**	**सदस्य**
७.	**डॉ. रमेश गौतम**	**सदस्य**
८.	**डॉ. अवधेश नारायण मिश्र**	**सदस्य**
९.	**डॉ. उर्मिला देवी**	**सदस्य सचिव**

समिति ने सर्वप्रथम विभिन्न विश्वविद्यालयों में निर्धारित हिन्दी पाठ्यक्रमों का अध्ययन किया। इसके साथ ही पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा १६८६ में निश्चित किए गए हिन्दी पाठ्यक्रमों पर भी विचार किया। यह अनुभव किया कि वर्तमान स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में एकरूपता का नितांत अभाव है। समिति ने इस पाठ्यक्रम का प्रारूप बनाने के पूर्व हिन्दी पाठ्यक्रम दर्शन पर भी विचार विमर्श किया। यह निश्चय किया गया कि एक ऐसा प्रादर्श बनाया जाए जो—

१. हिन्दी भाषा और साहित्य के सम्पूर्ण इतिहास के विकासात्मक स्वरूप का संज्ञान कर सके;
२. जो रोजगार की अधिकाधिक संभावनाएँ उद्घाटित करे;
३. जिसके माध्यम से एक विशिष्ट मानवीय प्रबोध प्राप्त हो;
४. जिस पाठ्यक्रम द्वारा भाषायी सौहार्द्र और राष्ट्रीय भावैक्य को बढ़ावा मिले।

इसी ध्येय से, प्रथम बार भारतीय साहित्य और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों से संबंधित कई प्रश्नपत्र संस्तुत किए गए हैं।

समिति ने यह भी अनुभव किया कि पाठ्यक्रम व्यावसायिक हित, **दलीय** मतवाद और क्षेत्रीय आग्रह से ग्रस्त नहीं होने चाहिए। यह भी अनुभव किया गया कि विश्वविद्यालयों की स्वायत्ता के साथ अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं किया जाना चाहिए, इसलिए स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम का लचीला होना बहुत आवश्यक है। इस दृष्टि से दो प्रकार के वर्ग निर्धारित किए गए—

१. **बीज पाठ्यक्रम**
२. **वैकल्पिक पाठ्यक्रम**

समिति ने **बीज पाठ्यक्रम** के अंतर्गत निम्नलिखित आठ प्रश्नपत्रों की संस्तुति की :

१. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य
२. आधुनिक हिन्दी काव्य

३. आधुनिक गद्य साहित्य
४. भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा
५. काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन
६. हिन्दी साहित्य का इतिहास
७. प्रयोजनमूलक हिन्दी
८. भारतीय साहित्य

समिति की यह संस्तुति है कि–

१. उपर्युक्त बीज पाठ्यक्रम के आठों प्रश्नपत्र प्रत्येक विश्वविद्यालय में अनिवार्य रूप से लागू किए जाएँ। यहाँ निर्धारित रचनाकारों और पाठ्यग्रंथों के कई विकल्प दे दिए गए हैं, जिनमें से संबंधित विश्वविद्यालय अपनी आवश्यकता और अभिरुचि के अनुरूप सात का चयन करेंगे। इन प्रश्नपत्रों में निर्धारित पाठ्यग्रंथों से व्याख्यात्मक और आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। इनके साथ ही द्रुत पाठ के लिए कई रचनाकारों/रचनाओं की संस्तुति की गयी है जिन पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे। लघूत्तरी प्रश्नों से संबंधित रचनाकारों का चयन विश्वविद्यालयों के विवेकाधीन होगा। जो रचनाकार/रचनाएँ व्याख्या एवं आलोचनात्मक पाठ्यांश के लिए न ली जा रही हों, उन्हें द्रुतपाठ की सूची में सम्मिलित कर लिया जाए।

२. समिति की यह संस्तुति है कि प्रत्येक प्रश्नपत्र १०० अंकों का हो और सम्पूर्ण एम.ए. परीक्षा १००० अंकों की हो। जो विश्वविद्यालय सेमेस्टर परीक्षा चला रहे हैं, वे एक प्रश्नपत्र को दो खण्डों में विभाजित कर लेंगे (५० + ५० अंक)।

३. वर्ग 'ब' में दो खण्ड रखे गये हैं–

(१) साहित्यिक (२) व्यावसायिक।

साहित्यिक खण्ड में निर्धारित प्रश्नपत्र इस प्रकार हैं–

(क) लोक साहित्य

(ख) जनपदीय भाषा और साहित्य

इनके अतिरिक्त ३ विशेषाध्ययन रखे गए हैं।

(ग) रचनाकारों का विशेषाध्ययन

इसमें दस रचनाकार निर्धारित किए गए हैं–

कबीरदास, मलिक मुहम्मद जायसी, सूरदास, तुलसीदास, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', प्रेमचंद, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी।

(घ) **विशिष्ट विधा का अध्ययन**–इसमें तीन विकल्प रखे गये हैं–
हिन्दी उपन्यास, हिन्दी आलोचना साहित्य, नाटक एवं रंगमंच।

(ङ) **विशिष्ट युग प्रवृत्ति का अध्ययन**–इसमें पाँच विकल्प रखे गये हैं–
आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, छायावाद युग, छायावादोत्तर युग।

साहित्यिक वर्ग के उपर्युक्त २० प्रश्नपत्रों में कम से कम एक प्रश्नपत्र का चयन आवश्यक है।

व्यावसायिक वर्ग–इसमें सात विकल्प रखे गए हैं–

१. पत्रकारिता प्रशिक्षण
२. अनुवाद विज्ञान

३. कोश विज्ञान
४. पाठालोचन
५. राजभाषा प्रशिक्षण
६. दृश्य–श्रव्य माध्यम लेखन
७. भाषा शिक्षण

यह निश्चय किया गया कि विश्वविद्यालय अपनी आवश्यकता के अनुरूप व्यावसायिक वर्ग में से कोई एक प्रश्नपत्र अवश्य निर्धारित करें। विकल्प आवंटित करते समय यह देख लिया जाय कि विद्यार्थी ने वही पाठ्यक्रम स्नातक प्रतिष्ठा स्तर पर न पढ़ा हो। इस वर्ग में प्रत्येक प्रश्नपत्र के साथ प्रायोगिक कार्य जोड़ा गया है। इसका मूल्यांकन अलग से करना अभीष्ट होगा। ये समस्त प्रश्नपत्र १००–१०० अंकों के होंगे।

कुछ रचनाकारों के पाठ्यग्रंथों को बीज पाठ्यक्रम के साथ–साथ विशेषाध्ययन, विशिष्ट प्रवृत्ति, विशिष्ट विधा आदि से संबंधित प्रश्नपत्रों में भी रखना पड़ा है। संबंधित विश्वविद्यालय से अपेक्षित है कि बीज पाठ्यक्रम में रखे गए पाठ्यग्रंथों (पाठ्यांशों) की पुनरुक्ति ऐसे प्रश्नपत्रों में न होने दे।

समिति ने हिन्दी की महत्वपूर्ण विभाषाओं में रचित जनपदीय साहित्य के पठन–पाठन का प्रावधान किया है ताकि इनका उत्तरोत्तर स्वतंत्र विकास होता रहे। इस प्रश्नपत्र में कवियों/कृतियों के निर्धारण का दायित्व संबंधित विश्वविद्यालय को सौंपा गया है। हम यह आशा करते हैं कि उनके प्रश्नपत्रों का प्रारूप बीज पाठ्यक्रम के प्रश्नपत्रों जैसा ही होगा अर्थात् इनमें पाठ्यग्रंथ होंगे, दुतपाठ हेतु संदर्भित रचनाकार रखे जायेंगे जिन पर वस्तुनिष्ठ तथा लघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे। अंक विभाजन इस प्रकार अपेक्षित हैं–

व्याख्याएँ	–	३ × १०	=	३० अंक
आलोचनात्मक प्रश्न	–	२ × १५	=	३० अंक
लघूत्तरी प्रश्न	–	५ × ४	=	२० अंक
वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी	–	२० × १	=	२० अंक
				१०० अंक

समिति ने सहायक ग्रंथों की सूची नहीं दी है। संबंधित विश्वविद्यालय अपनी आवश्यकता और पुस्तकों की उपलब्धता के आधार पर इनका चयन करेंगे।

अंत में यह निर्णय लिया गया कि इस पाठ्यक्रय का संपूर्ण अध्ययन किया जाए (अर्थात् कवियों/लेखकों को छोड़कर न पढ़ा जाए) इसलिए संपूर्ण पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँ और पाठ्यक्रम में समय–समय पर आवश्यक परिवर्तन भी किया जाए। इसीलिए वस्तुनिष्ठ और लघूत्तरी प्रश्नों का विधान किया गया है। इससे पठन–पाठन कक्षोन्मुख होगा और स्तरोन्नयन भी होगा।

(डॉ. शम्भूनाथ पाण्डेय)
समन्वयक

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

दो शब्द 3

कार्य वृत्त 5

सामान्य हिन्दी 9

बी.ए. उत्तीर्ण (पास) पाठ्यक्रम 13

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम 25

एम.ए. (हिन्दी) पाठ्यक्रम 43

एम.फिल्. (हिन्दी) पाठ्यक्रम 89

सामान्य हिन्दी

स्नातक प्रथम वर्ष

सामान्य हिन्दी

प्रस्तावना

हिन्दी को उच्चशिक्षा की माध्यम भाषा बनाने के लिए आवश्यक है कि मानविकी, समाजविज्ञान, विज्ञान, वाणिज्य आदि सभी संकायों के विद्यार्थी हिन्दी भाषा का अध्ययन करें। यह परीक्षा १०० अंकों की होगी और इसे उत्तीर्ण करना आवश्यक होगा। श्रेणी–निर्धारण में ये अंक नहीं जोड़े जायेंगे। प्रथम प्रश्नपत्र स्नातक प्रथम वर्ष परीक्षा और द्वितीय प्रश्नपत्र स्नातक द्वितीय वर्ष परीक्षा हेतु प्रस्तावित हैं।

पाठ्यविषय

हिन्दी अपठित

संक्षेपण

पल्लवन

पत्राचार

अनुवाद

पारिभाषिक शब्दावली

मुहावरे–लोकोक्तियाँ

शब्द–शुद्धि, वाक्य–शुद्धि

शब्द–ज्ञान – पर्याय, विलोम, अनेकार्थी, समश्रुत

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

देवनागरी लिपि एवं वर्तनी का मानक रूप

कम्प्यूटर में हिन्दी का अनुप्रयोग : प्रारम्भिक परिचय।

हिन्दी में संक्षिप्तीकरण

हिन्दी में पदनाम।

स्नातक द्वितीय वर्ष

सामान्य हिन्दी

पाठ्यविषय

खण्ड-क

निम्नलिखित में से किन्हीं ५ लेखकों के एक–एक निबंध संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा चयनित होंगे। ये निबन्ध हिन्दी भाषा के विभिन्न रूपों के प्रतिनिधि होने चाहिए, साथ ही विचारोत्तेजन करने में सक्षम भी।

1. महात्मा गांधी
2. विनोबा भावे
3. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
4. काका कालेलकर
5. आचार्य नरेन्द्र देव
6. डॉ. सम्पूर्णानन्द
7. वासुदेवशरण अग्रवाल
8. भगवतशरण उपाध्याय
9. मोटूरी सत्यनारायण
10. दीनदयाल उपाध्याय
11. डॉ. श्यामाचरण दूबे
12. डॉ. देवराज
13. रेवि वर्मा
14. जयन्त विष्णु नार्लीकर
15. गुणाकर मुले

खण्ड-ख

हिन्दी भाषा और उसके विविध रूप

- कार्यालयी भाषा
- मीडिया की भाषा
- वित्त एवं वाणिज्य की भाषा
- मशीनी भाषा

खण्ड-ग

अनुवाद व्यवहार : अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

बी.ए. उत्तीर्ण (पास)
पाठ्यक्रम

बी.ए. उत्तीर्ण (पास) पाठ्यक्रम

स्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य संबंधी पाठ्यक्रमों में स्तर और पाठ्य सामग्री की दृष्टि से बहुत अधिक अंतर दिखाई देता है। इनमें किसी न किसी रूप में एकरूपता अपेक्षित है।

समिति की यह संस्तुति है कि त्रिवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम में सात प्रश्नपत्र अवश्य निर्धारित किए जाएँ–

बी.ए. प्रथम वर्ष – २ प्रश्नपत्र

बी.ए. द्वितीय वर्ष – २ प्रश्नपत्र

बी.ए. तृतीय वर्ष – ३ प्रश्नपत्र

इनका अंक विभाजन और वर्ष वार प्रश्नपत्रों का विन्यास संबंधित विश्वविद्यालय अपने विवेक के अनुसार करेंगे।

प्रस्तावित प्रश्नपत्र निम्नवत् हैं –

१ प्राचीन हिन्दी काव्य

२ अर्वाचीन हिन्दी काव्य

३ हिन्दी कथा साहित्य

४ हिन्दी नाटक, निबन्ध तथा स्फुट गद्य विधाएँ

५ प्रयोजनमूलक हिन्दी

६ जनपदीय भाषा–साहित्य अथवा प्रादेशिक भाषा–साहित्य

७ हिन्दी भाषा–साहित्य का इतिहास तथा काव्यांग परिचय।

निर्देश :

१. जिन प्रश्नपत्रों में पाठ्यांश निर्धारित हैं, उनमें पठनीय कृति का निर्णय लेते समय यह अवश्य देख लें कि वही कृति किसी अन्य पाठ्यक्रम में निर्धारित न हो।

२. पाठ्यांशों के अनेक विकल्प यहाँ दिए गए हैं। जो लेखक/रचनाएँ व्याख्या के लिए स्वीकृत न की जा रही हों, उन्हें द्रुत पाठ की सूची में सम्मिलित कर लिया जाए।

बी.ए. उत्तीर्ण (पास) पाठ्यक्रम
प्राचीन हिन्दी काव्य
प्रश्नपत्र-१

प्रस्तावना

प्राचीन से तात्पर्य है आधुनिक काल से पूर्व के काल। सही अर्थ में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास आदिकाल से शुरू होता है। इसमें धार्मिक तथा ऐहिक दो प्रकार का साहित्य मिलता है जो प्रबंध, मुक्तक, रासो, फागु, चरित, सुभाषित आदि विविध काव्यरूपों में अभिव्यंजित है। मध्यकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि के रूप में इसे प्रतिष्ठापित किया जाता है।

मध्यकालीन काव्य में भक्तिकाव्य जहाँ लोकजागरण को स्वर देनेवाला है, वहीं रीतिकाल अपने लौकिक–शृंगारिक परिदृश्य में तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्थितियों को बेलौस अभिव्यंजित करता है। अतः भाषा, संस्कृति, विचार, मानवता, काव्यत्व, काव्यरूपता, लौकिकता, पारलौकिता आदि दृष्टियों से इसका अध्ययन अत्यावश्यक है।

पाठ्यविषय

निम्नांकित कवियों में से किन्हीं पाँच कवियों का चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा जिन पर व्याख्यात्मक तथा आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे––

१	**विद्यापति**	२५ पद
२	**कबीर**	५० साखियाँ
३	**जायसी**	पद्मावत का कोई एक खण्ड
४	**सूर**	२५ पद
५	**तुलसी**	२५ छंद
६	**मीराँबाई**	२५ पद
७	**बिहारी**	५० दोहे
८	**घनानन्द**	२५ छंद
९	**देव**	२५ छंद

द्रुत पाठ हेतु निम्नांकित कवियों में से किन्हीं तीन कवियों का चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा जिनमें से किन्हीं दो पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे –

चंदबरदाई, अमीर खुसरो, नरपति नाल्ह, नामदेव, रसखान, रहीम, दयाराम, केशव, पद्माकर, भूषण।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३०% अंक
२ आलोचनात्मक प्रश्न : ३०% अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. उत्तीर्ण (पास) पाठ्यक्रम
अर्वाचीन हिन्दी काव्य
प्रश्नपत्र-२

प्रस्तावना

आधुनिक काव्य आधुनिकता की समस्त विशेषताओं को समेटे हुए है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व की भाव–भाषा, शिल्प, अन्तर्वस्तु संबंधी समस्त विकासधारा यहाँ सजीव रूप में देखी जा सकती है। इसे अनदेखा करना मनुष्य की विकासयात्रा को नज़र–अन्दाज करना होगा। इस यात्रा के साक्षात्कार के लिए आधुनिक काव्य का अध्ययन अपेक्षित ही नहीं अपितु अनिवार्य है।

पाठ्यविषय

निम्नांकित कवियों में से किन्हीं पाँच कवियों का चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा जिन पर व्याख्यात्मक तथा आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे –

१	**मैथिलीशरण गुप्त**	५ कविताएँ
२	**जयशंकर प्रसाद**	५ कविताएँ
३	**सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'**	५ कविताएँ
४	**सुमित्रानंदन पंत**	५ कविताएँ
५	**महादेवी वर्मा**	५ कविताएँ
६	**माखनलाल चतुर्वेदी**	५ कविताएँ
७	**हरिवंश राय बच्चन**	५ कविताएँ
८	**स. ही. वात्स्यायन अज्ञेय**	५ कविताएँ
९	**रामधारी सिंह 'दिनकर'**	५ कविताएँ

द्रुतपाठ हेतु निर्धारित निम्नांकित कवियों में से किन्हीं तीन का चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा जिनमें से किन्हीं दो पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे–

भारतेंदु हरिश्चन्द्र, श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, जगन्नाथदास 'रत्नाकर', अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', सुभद्राकुमारी चौहान, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, वंशीधर शुक्ल, भवानीप्रसाद मिश्र, श्रीकान्त वर्मा, धर्मवीर भारती, वीरेन्द्र मिश्र, धूमिल, रघुवीर सहाय, दुष्यन्त कुमार।

अंक विभाजन :
३ व्याख्याएँ : ३०% अंक
२ आलोचनात्मक प्रश्न : ३०% अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. उत्तीर्ण (पास) पाठ्यक्रम
हिन्दी कथा साहित्य
प्रश्नपत्र-३

प्रस्तावना

गद्य की प्रमुख विधाओं का इतना द्रुत विकास इनकी लोकप्रियता का प्रमाण प्रस्तुत करता है। इनमें आधुनिक जीवन अपनी विविध छवियों के साथ यथार्थ रूप में अभिव्यंजित हुआ है। जीवन की अनुभूतियों, संवेदनाओं तथा विविध परिस्थितियों के साक्षात्कार के लिए इनका अध्ययन सर्वथा अपेक्षित है।

पाठ्यविषय

व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित ४ उपन्यासों में से कोई एक उपन्यास और निम्नांकित १२ कहानीकारों में से किन्हीं ८ कहानीकारों की एक–एक प्रतिनिधि कहानी का निर्धारण संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा –

उपन्यास

१	**गबन**	:	प्रेमचंद
२	**सुनीता**	:	जैनेन्द्र
३	**झाँसी की रानी** (संक्षिप्त संस्करण)	:	वृन्दावनलाल वर्मा
४	**जहाज का पंछी** (संक्षिप्त संस्करण)	:	इलाचन्द्र जोशी

कहानीकार

१. बंगमहिला, २. जयशंकर प्रसाद, ३. प्रेमचंद, ४. भगवतीचरण वर्मा, ५. यशपाल, ६. कमलेश्वर, ७. रांगेय राघव ८. फणीश्वरनाथ रेणु, ९. भीष्म साहनी, १०. राजेन्द्र यादव, ११. मोहन राकेश, १२. अमरकान्त।

द्रुतपाठ के लिए निम्नलिखित कथाकारों में से किन्हीं तीन का अध्ययन अपेक्षित है जिनमें से किन्हीं दो पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे–

सुदर्शन, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', रामवृक्ष बेनीपुरी, उपेन्द्रनाथ अश्क, द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण', पं. गंगा प्रसाद मिश्र, मार्कण्डेय, महीपसिंह, आरिगपुडि, बालशौरि रेड्डी, शिवानी, मालती जोशी, शैलेश मटियानी, सूर्यबाला, राजी सेठ।

अंक विभाजन :
३ व्याख्याएँ : ३०% अंक
२ आलोचनात्मक प्रश्न : ३०% अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. उत्तीर्ण (पास) पाठ्यक्रम
हिन्दी नाटक, निबन्ध तथा स्फुट गद्य विधाएँ
प्रश्नपत्र-४

पाठ्यविषय

व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित तीन नाटकों में से कोई एक नाटक, दस निबंधकारों में से किन्हीं पाँच के एक–एक प्रतिनिधि निबंध और निम्नांकित १० एकांकीकारों में से किन्हीं पाँच के एक–एक प्रतिनिधि एकांकी का निर्धारण संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा।

नाटक

१	**अँधेर नगरी**	:	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
२	**ध्रुवस्वामिनी**	:	जयशंकर प्रसाद
३	**कोणार्क**	:	जगदीशचन्द्र माथुर

निबन्ध

बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, बालमुकुन्द गुप्त, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, बाबू गुलाब राय, डॉ. विद्यानिवास मिश्र, हरिशंकर परसाई, शंकर पुणतांबेकर।

एकांकीकार

डॉ. रामकुमार वर्मा, पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ अश्क, भगवतीचरण वर्मा, डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, सेठ गोविन्ददास, भुवनेश्वर, विष्णु प्रभाकर, मोहन राकेश।

द्रुतपाठ के लिए निम्नांकित गद्यकारों में से किन्हीं तीन का अध्ययन अपेक्षित है जिनमें से किन्हीं दो पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे –

सरदार पूर्ण सिंह, राहुल सांकृत्यायन, महादेवी वर्मा, नन्ददुलारे वाजपेयी, डॉ. नगेन्द्र, शरद जोशी, सेठ गोविन्द दास, हरिकृष्ण प्रेमी, विपिन कुमार अग्रवाल, हबीब तनवीर।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३०% अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : ३०% अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. उत्तीर्ण (पास) पाठ्यक्रम
प्रयोजनमूलक हिन्दी
प्रश्नपत्र-५

प्रस्तावना

हिन्दी भाषा को प्रशासन, संचार, जनमाध्यम और ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न अनुशासनों की भाषा बनाना समय की माँग है। इस प्रशिक्षण द्वारा एक ओर तो रोजगार की संभावनाओं की अभिवृद्धि होगी और दूसरी ओर हिन्दी के भाषिक अनुप्रयोग का परिविस्तार होगा।

पाठ्यविषय

१. प्रयोजनमूलक हिन्दी का अभिप्राय

२. कामकाजी हिन्दी – क. पत्राचार, भाषा कम्प्यूटिंग ख. पत्रकारिता, ग. मीडिया लेखन, घ. अनुवाद

पत्राचार : कार्यालयी पत्र, व्यावसायिक पत्र, व्यावहारिक पत्र। संक्षेपण, पल्लवन, प्रारूपण, टिप्पण।

भाषा कम्प्यूटिंग : वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग और फांट प्रबंधन।

पत्रकारिता : पत्रकारिता का स्वरूप और वर्तमान परिदृश्य, समाचार–लेखन, शीर्षकीकरण, पृष्ठविन्यास।

संपादन कला : प्रिंट मीडिया, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, फीचर लेखन, पृष्ठ सज्जा एवं प्रस्तुतीकरण।

मीडिया लेखन : संचार भाषा का स्वरूप और वर्तमान संचार व्यवस्था।

प्रमुख जनसंचार माध्यम : प्रेस, रेडियो, टी.वी., फिल्म, वीडियो तथा इन्टरनेट।

माध्यमोपयोगी लेखन-प्रविधि।

अनुवाद : स्वरूप एवं प्रक्रिया, कार्यालयी अनुवाद, वैज्ञानिक अनुवाद, तकनीकी अनुवाद, वाणिज्यिक अनुवाद, विधिक अनुवाद, पारिभाषिक शब्दावली, वैट्टिंग, आशु अनुवाद।

अंक विभाजन :
४ आलोचनात्मक प्रश्न : ६०% अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्नः २०% अंक

बी.ए. उत्तीर्ण (पास) पाठ्यक्रम
जनपदीय भाषा-साहित्य
प्रश्नपत्र-६

प्रस्तावना

हिन्दी केवल खड़ीबोली नहीं है, बल्कि एक बहुत बड़ा भाषिक समूह है। हिन्दी जगत में अनेक विभाषाएँ, बोलियाँ और उपबोलियाँ विद्यमान हैं जिनमें पुष्कल साहित्य सम्पदा है। इनके सम्यक् अध्ययन और अन्वेषण की आवश्यकता है। निम्नलिखित विभाषाएँ साहित्यिक दृष्टि से अपेक्षाकृत बहुत समृद्ध हैं। अस्तु इन भाषाओं का और उनमें रचित साहित्य का इतिहास–विकास स्पष्ट करते हुए इनसे संबंधित प्रमुख रचनाकारों का आलोचनात्मक अनुशीलन करना हिन्दी के बृहत्तर हित में होगा। प्रत्येक विश्वविद्यालय से यह अपेक्षित है कि अपने क्षेत्र से संबंधित किसी एक विभाषा का पाठ्यक्रम इन बिन्दुओं के आधार पर निर्धारित करे–

(क) सन्दर्भित भाषा का इतिहास–विकास

(ख) उस विभाषा में रचित साहित्य का इतिहास

(ग) उस विभाषा के प्रमुख प्राचीन एवं अर्वाचीन रचनाकारों की स्तरीय कृतियों का संकलन

व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्रश्नों हेतु पाँच रचनाकारों के पाठ्यांशों का चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा। इनके अतिरिक्त द्रुतपाठ हेतु किन्हीं तीन रचनाकारों का चयन अपेक्षित है जिनमें से दो पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे।

इस प्रश्नपत्र में निम्नलिखित में से किसी एक भाषा–साहित्य का पठन–पाठन अपेक्षित है –

ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी, मैथिली, बुन्देली, छत्तीसगढ़ी, कुमाऊँनी, गढ़वाली, हरियाणवी, दक्खिनी हिन्दी।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३०% अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : ३०% अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. उत्तीर्ण (पास) पाठ्यक्रम
प्रादेशिक भाषा-साहित्य
प्रश्नपत्र-६

प्रस्तावना

भारत बहुभाषी देश है। संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्प्रति १८ प्रादेशिक भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। ये सब हिन्दी की भगिनी भाषाएँ हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से सभी भारतीय भाषाओं में अद्‌भुत साम्य है। इन सबके सर्वांग परिचय द्वारा ही अखण्ड भारतीयता और एक समेकित भारतीय साहित्य की अवधारणा फलीभूत हो सकती है। अस्तु, हिन्दीतर राज्य के हिन्दी विद्यार्थी से अपेक्षित है कि वह हिन्दी भाषा और साहित्य के साथ–साथ अपनी प्रादेशिक भाषा में रचित साहित्य का भी सामान्य परिचय अर्जित करे।

प्रादेशिक भाषाओं में जिनका साहित्य वस्तुतः बहुत समृद्ध है और हिन्दी भाषा साहित्य का पूरक है, उनमें निम्नांकित बारह भाषाएँ निर्विवाद रूप से अग्रगण्य हैं। हिन्दीतर राज्यों के विश्वविद्यालयों से अपेक्षित है कि वे अपनी प्रादेशिक भाषा के वैशिष्ट्य, उसमें रचित साहित्य, प्रमुख रचनाकार तथा भाषा के विशिष्ट प्रदेय को दृष्टि में रखते हुए इस प्रश्नपत्र का गठन निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर करे :

(क) भाषा का इतिहास

(ख) साहित्य का इतिहास

(ग) रचनाकार और उनकी प्रतिनिधि रचनाएँ

व्याख्या एवं विवेचन के लिए ५ प्रतिनिधि रचनाकारों के पाठ्यांशों का चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा। इनके अतिरिक्त द्रुतपाठ हेतु किन्हीं तीन रचनाकारों का चयन अपेक्षित है जिनमें से किन्हीं दो पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे।

संस्तुत प्रादेशिक भाषाएँ

असमिया, उड़िया, बंगला, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, मराठी, मलयालम, सिन्धी।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३०% अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : ३०% अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. उत्तीर्ण (पास) पाठ्यक्रम
हिन्दी भाषा–साहित्य का इतिहास तथा काव्यांग विवेचन

प्रश्नपत्र-७

प्रस्तावना

हिन्दी भाषा का इतिहास जितना प्राचीन है, उतना ही गूढ़–गहन भी। इसमें रचित साहित्य ने लगभग डेढ़ हजार वर्षों का इतिहास पूरा कर लिया है। इसलिए हिन्दी भाषा और साहित्य के ऐतिहासिक विवेचन की बड़ी आवश्यकता है। इसी के साथ–साथ हिन्दी ने अपना जो स्वतंत्र साहित्य–शास्त्र निर्मित किया है, उसे भी रूपायित करने की आवश्यकता है। इसके संज्ञान द्वारा विद्यार्थी की मर्मग्राहिणी प्रतिभा का विकास होगा और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में शुद्ध साहित्यिक विवेक का सन्निवेश होगा।

इस प्रश्नपत्र के तीन उपभाग होंगे –

(क) हिन्दी भाषा का स्वरूप–विकास

(ख) हिन्दी साहित्य का इतिहास

(ग) काव्यांग परिचय।

पाठ्यविषय

(क) हिन्दी भाषा का स्वरूप-विकास – हिन्दी की उत्पत्ति, हिन्दी की मूल आकर भाषाएँ तथा विभिन्न विभाषाओं का विकास। हिन्दी भाषा के विभिन्न रूप – १. बोलचाल की भाषा, २. रचनात्मक भाषा, ३. राष्ट्रभाषा ४. राजभाषा ५. सम्पर्क भाषा, ६. संचार भाषा।
हिन्दी का शब्द भण्डार – तत्सम, तद्भव, देशज, आगत शब्दावली।

(ख) हिन्दी साहित्य का इतिहास – आदिकाल, पूर्वमध्यकाल, उत्तरमध्यकाल और आधुनिक काल की सामाजिक–राजनीतिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रमुख युग प्रवृत्तियाँ, विशिष्ट रचनाकार और उनकी प्रतिनिधि कृतियाँ, साहित्यिक विशेषताएँ।

(ग) काव्यांग – काव्य का स्वरूप, हेतु एवं प्रयोजन। रस के विभिन्न भेद, प्रमुख छंद, पाँच शब्दालंकार, पाँच अर्थालंकार। (इनका निर्धारण संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा।)

अंक विभाजन :
४ आलोचनात्मक प्रश्न : ६०% अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स)
हिन्दी पाठ्यक्रम

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम

भारतीय विश्वविद्यालयों में हिंदी से संबंधित प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम के कई रूप दिखाई देते हैं,कहीं ८ प्रश्नपत्र हैं तो कहीं १२ प्रश्नपत्र। इनमें एकरूपता लाने की अपेक्षा है। समिति की संस्तुति है कि निम्नलिखित ८ प्रश्नपत्र अनिवार्य रूप से पढ़ाए जाएँ –

१ प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य

२ आधुनिक हिन्दी काव्य

३ छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

४ हिन्दी कथा साहित्य

५ हिन्दी नाट्य साहित्य

६ हिन्दी निबंध तथा अन्य गद्य विधाएँ

७ हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास

८ साहित्य–सिद्धांत और हिन्दी आलोचना।

इनके अतिरिक्त जो विश्वविद्यालय अधिक पढ़ाना चाहें, उनके लिए निम्नलिखित प्रश्नपत्र प्रस्तावित हैं–

१ प्रयोजनमूलक हिन्दी

२ जनपदीय भाषा–साहित्य अथवा प्रादेशिक भाषा–साहित्य

३ राजभाषा प्रशिक्षण

४ संचार माध्यम लेखन।

निर्देश :

१. जिन प्रश्नपत्रों में पाठ्यांश निर्धारित हैं, उनमें पठनीय कृति का निर्णय लेते समय यह अवश्य देख लें कि वही कृति किसी अन्य पाठ्यक्रम में निर्धारित न हो।

२. पाठ्यांशों के अनेक विकल्प यहाँ दिए गए हैं। जो लेखक/रचनाएँ व्याख्या के लिए स्वीकृत न की जा रही हों , उन्हें द्रुत पाठ की सूची में सम्मिलित कर लिया जाए।

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम
प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य
प्रश्नपत्र-१

प्रस्तावना

प्राचीन से तात्पर्य है आदिकाल और मध्यकाल। सही अर्थ में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास आदिकाल से शुरू होता है। इसमें धार्मिक तथा ऐहिक दो प्रकार का साहित्य मिलता है जो प्रबंध, मुक्तक, रासो, फागु, चरित, सुभाषित आदि विविध काव्यरूपों में अभिव्यंजित है। मध्यकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि के रूप में इसे प्रतिष्ठापित किया जाता है।

मध्यकालीन काव्य में भक्तिकाव्य जहाँ लोकजागरण को स्वर देनेवाला हैं, वहीं रीतिकाल अपने लौकिक–शृंगारिक परिदृश्य में तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्थितियों को बेलौस अभिव्यंजित करता है। अतः भाषा, संस्कृति, विचार, मानवता, काव्यत्व, काव्यरूपता, लौकिकता, पारलौकिकता आदि दृष्टियों से इसका अध्ययन अत्यावश्यक है।

पाठ्यविषय

निम्नांकित कवियों में से किन्हीं पाँच कवियों का चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा जिस पर व्याख्यात्मक तथा आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे –

१	**विद्यापति**	२५ पद
२	**कबीर**	५० साखियाँ
३	**जायसी**	पद्मावत का कोई एक खण्ड
४	**सूर**	२५ पद
५	**तुलसी**	२५ छंद
६	**मीराँबाई**	२५ पद
७	**बिहारी**	५० दोहे
८	**घनानन्द**	२५ छंद
९	**देव**	२५ छंद

द्रुत पाठ हेतु निम्नांकित कवियों में से किन्हीं तीन कवियों का अध्ययन अपेक्षित है जिनमें से किन्हीं दो पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे –

चंदबरदाई, अमीर खुसरो, नरपति नाल्ह, नामदेव, रसखान, रहीम, दयाराम, केशव, पद्माकर, भूषण।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३०% अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : ३०% अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम
आधुनिक हिन्दी काव्य
प्रश्नपत्र-२

प्रस्तावना

आधुनिक काव्य आधुनिकता की समस्त विशेषताओं को समेटे हुए है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व की भाव, भाषा, शिल्प, अन्तर्वस्तु संबंधी समस्त विकासधारा यहाँ सजीव रूप में देखी जा सकती है। इसे अनदेखा करना मनुष्य की विकासयात्रा को नज़र–अन्दाज़ करना होगा। इस यात्रा के साक्षात्कार के लिए आधुनिक काव्य का अध्ययन अपेक्षित ही नहीं, अनिवार्य है।

पाठ्यविषय

निम्नांकित कवियों में से किन्हीं पाँच कवियों का चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा, जिन पर व्याख्यात्मक तथा आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे––

१	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	कोई २५ छंद
२	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	प्रियप्रवास (कोई एक सर्ग)
३	जगन्नाथदास रत्नाकर	उद्धवशतक (कोई २५ छंद)
४	मैथिलीशरण गुप्त	यशोधरा (पद्य भाग)
५	जयशंकर प्रसाद	कोई ५ कविताएँ अथवा 'आँसू' के २० छंद
६	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	१० कविताएँ
७	सुमित्रानंदन पंत	१० कविताएँ
८	महादेवी वर्मा	१० कविताएँ
९	माखनलाल चतुर्वेदी	१० कविताएँ

द्रुत पाठ हेतु निम्नांकित कवियों में से किन्हीं तीन कवियों का अध्ययन अपेक्षित है जिनमें से किन्हीं दो पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे –

श्रीधर पाठक, सत्यनारायण कविरत्न, सोहनलाल द्विवेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, रामनरेश त्रिपाठी, भगवतीचरण वर्मा, डॉ. रामकुमार वर्मा, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', पं. गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', अनूप शर्मा, जगदम्बाप्रसाद 'हितैषी'।

अंक विभाजन :
३ व्याख्याएँ : ३०% अंक
२ आलोचनात्मक प्रश्न : ३०% अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम
छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

प्रश्नपत्र-३

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी कविता ने अपने जीवन के लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूरे कर लिए हैं। इस विकास–यात्रा को एक प्रश्नपत्र में सम्मिलित कर पाना व्यावहारिक दृष्टि से समीचीन नहीं है। इसलिए छायावाद तक के काव्य–विकास को एक प्रश्नपत्र में और छायावादोत्तर काव्य के विकास को दूसरे प्रश्नपत्र में सम्मिलित करना अब अनिवार्य हो गया है। इस प्रश्नपत्र में प्रगतिवाद, मधुकाव्य, प्रयोगवाद, नयी कविता और समकालीन कविता के कवियों का नाम इसीलिए प्रस्तावित किया जा रहा है

पाठ्यविषय

व्याख्या और आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निम्नलिखित कवियों में से किन्हीं छह कवियों और उनकी पाँच–पाँच प्रतिनिधि कविताओं का चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा –

१ रामधारी सिंह 'दिनकर'
२ हरिवंश राय बच्चन
३ सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
४ गजानन माधव मुक्तिबोध
५ श्री नरेश मेहता
६ धर्मवीर भारती
७ भवानी प्रसाद मिश्र
८ नागार्जुन
९ सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
१० धूमिल

द्रुतपाठ हेतु निम्नलिखित कवियों मे से किन्हीं तीन का निर्धारण संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा जिनमें से किन्हीं दो पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे –

रामेश्वरशुक्ल अंचल, श्यामनारायण पाण्डेय, शिवमंगल सिंह 'सुमन', केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, ठाकुरप्रसाद सिंह, गिरिजाकुमार माथुर, डॉ. शम्भूनाथ सिंह, विजयदेवनारायण साही, कुँवरनारायण, डॉ. रामदरश मिश्र, केदारनाथ सिंह, गोपाल सिंह नेपाली, श्रीकान्त वर्मा, रघुवीर सहाय, आलोकधन्वा।

अंक विभाजन :
३ व्याख्याएँ : ३०% अंक
२ आलोचनात्मक प्रश्न : ३०% अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम
हिन्दी कथा साहित्य
प्रश्नपत्र-४

प्रस्तावना

गद्य की प्रमुख विधाओं का इतना द्रुत विकास इनकी लोकप्रियता का प्रमाण प्रस्तुत करता है। इनमें आधुनिक जीवन अपनी विविध छवियों के साथ यथार्थ रूप में अभिव्यंजित हुआ है। जीवन की अनुभूतियों, संवेदनाओं तथा विविध परिस्थितियों के साक्षात्कार के लिए इनका अध्ययन सर्वथा अपेक्षित है।

पाठ्यविषय

व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित चार उपन्यासों में से दो उपन्यास और बारह कहानीकारों में से किन्हीं छह कहानीकारों की एक-एक प्रतिनिधि कहानी का निर्धारण संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा –

उपन्यास

कर्मभूमि : प्रेमचंद <u>अथवा</u> मानस का हंस : अमृतलाल नागर

दिव्या : यशपाल. <u>अथवा</u> चित्रलेखा : भगवतीचरण वर्मा

कहानीकार

१. जयशंकर प्रसाद, २ प्रेमचंद ३. जैनेन्द्र कुमार, ४. रांगेय राघव, ५. निर्मल वर्मा, ६. फणीश्वरनाथ रेणु, ७. कमलेश्वर ८ कृष्णा सोबती ९ मोहन राकेश, १० राजेन्द्र यादव, ११. ज्ञानरंजन, १२. उषा प्रियंवदा।

द्रुतपाठ के लिए निम्नांकित कथाकारों में से किन्हीं तीन का अध्ययन अपेक्षित है जिनमें से किन्हीं दो पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे –

इलाचंद्र जोशी, राहुल सांकृत्यायन, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, भीष्म साहनी, रुद्रकाशिकेय, श्रीलाल शुक्ल, विष्णु प्रभाकर, भैरवप्रसाद गुप्त, बालशौरि रेड्डी, हिमांशु जोशी, अनन्तगोपाल शेवड़े।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३०% अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : ३०% अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम
हिन्दी नाट्य साहित्य
प्रश्नपत्र-५

पाठ्यविषय

व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित तीन नाटकों में से किन्हीं दो नाटक और १० एकांकीकारों में से किन्हीं छह के एक--एक प्रतिनिधि एकांकी का चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा।

नाटक

ध्रुवस्वामिनी अथवा अजातशत्रु	:	जयशंकर प्रसाद
लहरों के राजहंस	:	मोहन राकेश
पहला राजा	:	जगदीशचन्द्र माथुर

एकांकीकार

डॉ. रामकुमार वर्मा, पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ अश्क, भगवतीचरण वर्मा, लक्ष्मीनारायण लाल, भुवनेश्वर, विष्णु प्रभाकर, सेठ गोविन्ददास, भारतभूषण अग्रवाल।

द्रुतपाठ के लिए निम्नांकित रचनाकारों में से किन्हीं तीन का अध्ययन अपेक्षित है जिनमें से किन्हीं दो पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे —

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, हरिकृष्ण प्रेमी, धर्मवीर भारती, शंकर शेष, विपिन कुमार अग्रवाल, हबीब तनवीर, दुष्यन्त कुमार, श्री नरेश मेहता, बृजभूषण शाह।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३०% अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : ३०% अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम
हिन्दी निबन्ध तथा अन्य गद्य विधाएँ
प्रश्नपत्र-६

प्रस्तावना

हिन्दी निबन्ध के अनेक रूप पिछले दशकों में विकसित हुए हैं। इसके साथ ही गद्य की कई नई विधाओं ने भी इस बीच अपना स्थान बनाया है। इस गद्य–युग में इन विधाओं का आरंभिक ज्ञान अत्यावश्यक है। यहाँ उन गद्यकारों के नाम प्रस्तावित किए जा रहे हैं जिन्होंने विभिन्न विधाओं में विशिष्ट लेखन किया है। संबंधित विश्वविद्यालय से अपेक्षा है कि १० निबंधकारों में से किन्हीं ६ का चयन कर लें और रेखाचित्र, संस्मरण, व्यंग्य एवं रिपोर्ताज क्षेत्र से एक–एक रचनाकार चुनें। इनसे संबंधित व्याख्यात्मक एवं आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।

पाठ्यविषय

निबंध (समीक्षात्मक/विवेचनात्मक/ललित):

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबू श्यामसुन्दर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, चन्द्रधरशर्मा गुलेरी, नन्ददुलारे वाजपेयी, बाबू गुलाबराय, डॉ. विद्यानिवास मिश्र, डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल।

रेखाचित्र एवं संस्मरण : महादेवी वर्मा अथवा रामवृक्ष बेनीपुरी का कोई रेखाचित्र अथवा संस्मरण

व्यंग्य : हरिशंकर परसाई अथवा शरद जोशी का कोई एक व्यंग्य लेख

रिपोर्ताज : फणीश्वरनाथ रेणु अथवा धर्मवीर भारती का कोई एक रिपोर्ताज

द्रुतपाठ हेतु निर्धारित निम्नलिखित रचनाकारों में से किन्हीं तीन का चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा जिनमें से किन्हीं दो पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे –

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', बालमुकन्द गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सरदार पूर्ण सिंह, राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय, डॉ.नगेन्द्र, बेढब बनारसी, डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. भगवतशरण उपाध्याय, यशपाल जैन, कुबेरनाथ राय।

अंक विभाजन :
३ व्याख्याएँ : ३०% अंक
२ आलोचनात्मक प्रश्न : ३०% अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम
हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास

प्रश्नपत्र-७

प्रस्तावना

हिन्दी भाषा का इतिहास जितना प्राचीन है, उतना ही गूढ़–गहन भी। इसमें रचित साहित्य ने लगभग डेढ़ हजार वर्षों का इतिहास पूरा कर लिया है। सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न परिस्थितियों के कारण भाषा और साहित्यिक रूपों में बदलाव की विकास–प्रक्रिया को हिन्दी भाषा और साहित्य के इतिहास के माध्यम से देखा–परखा जा सकता है। इसलिए हिन्दी भाषा और साहित्य के ऐतिहासिक विवेचन की अत्यधिक आवश्यकता है। इसके संज्ञान द्वारा विद्यार्थी में आठवीं–नवीं शताब्दी से लेकर आज तक के भाषिक और साहित्यिक विकास को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में ग्रहण करने की क्षमता का विकास होगा।

पाठ्यविषय

(क) **हिन्दी भाषा का स्वरूप-विकास**

हिन्दी की उत्पत्ति, हिंदी की मूल आकर भाषाएँ। पुरानी हिन्दी, अवहट्ट, डिंगल तथा विभिन्न विभाषाओं का विकास।

हिन्दी भाषा के विभिन्न रूप – १.बोलचाल की भाषा २. रचनात्मक भाषा ३. राष्ट्रभाषा ४. राजभाषा ५. संपर्क भाषा ६. संचार भाषा।

हिन्दी का शब्द भण्डार – तत्सम, तद्भव, देशज, आगत शब्दावली।

हिन्दी भाषा की निजी प्रकृति और निजी संस्कृति।

हिन्दी के प्रमुख वैयाकरण और भाषावैज्ञानिकों के अवदान का संक्षिप्त परिचय।

हिन्दी भाषा का मानकीकरण और आधुनिकीकरण।

(ख) **हिन्दी साहित्य का इतिहास**

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा। साहित्येतिहास में काल विभाजन और नामकरण की समस्या।

आदिकाल, पूर्वमध्यकाल, उत्तरमध्यकाल और आधुनिक काल की सामाजिक–राजनीतिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रमुख युग प्रवृत्तियाँ, विशिष्ट रचनाकार, उनकी प्रतिनिधि कृतियाँ एवं साहित्यिक विशेषताएँ; हिन्दी गद्य की विभिन्न विधाओं का विकास।

अंक विभाजन :

४ आलोचनात्मक प्रश्न : ६०: अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न : २०: अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न: २०: अंक

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम
साहित्य के सिद्धांत और हिन्दी आलोचना

प्रश्नपत्र-८

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के विधिवत् अध्ययन के लिए भारतीय तथा पाश्चात्य समीक्षा सिद्धांतों तथा हिन्दी आलोचना की विविध प्रणालियों का ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है विद्यार्थी में साहित्य की मर्मग्राहिणी क्षमता का विकास करना। इन समीक्षा सिद्धांतों के आलोक में उसके आलोचक व्यक्तित्व का निर्माण संभावित है।

पाठ्यविषय

भारतीय साहित्य-सिद्धांत

काव्य–लक्षण, काव्य–हेतु, काव्य–प्रयोजन, काव्य के प्रकार।
शब्द–शक्ति, काव्य–गुण, काव्य–दोष।
रस,अलंकार, रीति, ध्वनि और वक्रोक्ति सिद्धान्तों का सामान्य परिचय।
१० प्रमुख काव्यालंकार और १० छंद (निर्धारण संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा) ।

पाश्चात्य साहित्य-सिद्धांत

प्लेटो, वर्ड्सवर्थ, मैथ्यू आर्नल्ड और आई.ए.रिचर्ड्स के साहित्य–सिद्धांतों का सामान्य परिचय।
प्रमुख सिद्धांत और वाद : आभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, मनोविश्लेषणवाद।
बिंब, प्रतीक और मिथक।

प्रमुख हिन्दी आलोचक :

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. नन्ददुलारे वाजपेयी, डॉ. रामविलास शर्मा।

द्रुतपाठ हेतु निर्धारित निम्नलिखित समीक्षकों में से किन्हीं तीन समीक्षकों का निर्धारण संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा जिनमें से किन्हीं दो पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे–

मिश्रबंधु, पद्मसिंह शर्मा, लाला भगवानदीन, शान्तिप्रिय द्विवेदी, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, डॉ. इन्द्रनाथ मदान, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, आचार्य नलिनविलोचन शर्मा, डॉ. भगीरथ मिश्र, डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय, डॉ.दीनदयालु गुप्त, डॉ. भोलाशंकर व्यास, डॉ. नामवर सिंह।

अंक विभाजन :
४ आलोचनात्मक प्रश्न : ६०% अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम

वैकल्पिक पाठ्यक्रम -१

प्रयोजनमूलक हिन्दी

प्रस्तावना

मानव जीवन के संपर्क एवं समस्यायें दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ी हैं। अर्थ की महत्ता स्थापित हुई है। धर्म, काम, मोक्ष भी समयानुकूल इससे घनिष्ठ रूप से जुड़ रहे हैं। इधर रोज़गार, व्यावसायिकता, बैंकिंग आदि की प्रयोजनमूलकता काफी बढ़ी है। विविध व्यवहार और व्यापार की चुनौतियों का सामना सैद्धांतिक या साहित्यिक हिन्दी से न होकर प्रयोजनमूलक हिन्दी से ही संभव है। इसके विविध आयामों से न केवल रोज़गार या जीविका की समस्या हल होगी अपितु राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा का संस्कार भी दृढ़ होगा। अतः इसका अध्ययन अति अपेक्षित है।

पाठ्यविषय

खण्ड क : हिन्दी भाषा की व्यवस्था और उसका मानकीकरण

- हिन्दी भाषा का स्वरूप – मौखिक भाषा और लिखित भाषा।
- लिपि से अभिप्राय तथा वर्तनी का मानक रूप।
- हिन्दी भाषा का मानकीकरण।
- आधुनिकीकरण की प्रक्रिया और हिन्दी का आधुनिकीकरण।
- हिन्दी की शब्द सम्पदा और उसके मानकीकरण की प्रक्रिया।
- हिन्दी भाषा के विभिन्न रूप – सामान्य हिन्दी, साहित्यिक हिन्दी, प्रयोजनमूलक हिन्दी

खण्ड ख : प्रयोजनमूलक हिन्दी की अवधारणा और उसका अनुप्रयोग

- प्रयोजनमूलक हिन्दी से अभिप्राय और उसकी परिव्याप्ति
- प्रयोजनमूलक हिन्दी की प्रयुक्तियाँ और उसके प्रयोगात्मक क्षेत्र
- प्रयोजनमूलक हिन्दी और पारिभाषिक शब्दावली
- राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति
- राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन
- कार्यालयी हिन्दी की प्रकृति और उसका मुहावरा
- प्रशासनिक हिन्दी और उसकी शब्दावली
- प्रशासनिक पत्राचार और उसके प्रकार
- प्रशासनिक पदनाम और अनुभागों का नामकरण
- संक्षेपण, टिप्पण, प्रारूपण एवम् प्रतिवेदन लेखन

खण्ड ग : हिन्दी का वैज्ञानिक एवं तकनीकी रूप

- वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में हिन्दी
- हिन्दी की वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली
- हिन्दी के वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में पर्याय निर्धारण
- हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी–लेखन
- हिन्दी कम्प्यूटिंग
- हिन्दी–अनुप्रयोग में अनुवाद की भूमिका

  अनुवाद की अवधारणा, उसका महत्व और विभिन्न सिद्धांत

  हिन्दी अनुप्रयोग के विविध क्षेत्र और अनुवाद

  भूमंडलीकरण की परिकल्पना और अनुवाद

  रोज़गार के क्षेत्र और अनुवाद

खण्ड घ : हिन्दी में मीडिया लेखन

- जनसंचार–माध्यम : अभिप्राय, स्वरूप और विस्तार
- जनसंचार–माध्यमों के प्रकार
- जनसंचार–माध्यमों की भाषिक प्रकृति
- समाचार लेखन और हिन्दी
- संवाद लेखन और हिन्दी
- रेडियो–लेखन और हिन्दी
- विज्ञापन लेखन
- संपादन–कला के सिद्धांत
- अशुद्धि शोधन
- प्रूफ़ पठन

४ आलोचनात्मक प्रश्न ४ x १५ = ६० अंक
(प्रत्येक खण्ड से एक–एक)
५ लघूत्तरी प्रश्न ५ x ४ : २० अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २० x १ : २० अंक

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम

वैकल्पिक पाठ्यक्रम -२

जनपदीय भाषा-साहित्य

प्रस्तावना

हिन्दी केवल खड़ीबोली नहीं है, बल्कि एक बहुत बड़ा भाषिक समूह है। हिन्दी जगत में अनेक विभाषाएँ, बोलियाँ और उपबोलियाँ विद्यमान हैं जिनमें पुष्कल साहित्य सम्पदा है। इनके सम्यक् अध्ययन और अन्वेषण की आवश्यकता है। निम्नलिखित विभाषाएँ साहित्यिक दृष्टि से अपेक्षाकृत बहुत समृद्ध हैं। अस्तु इन भाषाओं का और उनमें रचित साहित्य का इतिहास–विकास स्पष्ट करते हुए इनसे संबंधित प्रमुख रचनाकारों का आलोचनात्मक अनुशीलन करना हिन्दी के बृहत्तर हित में होगा। प्रत्येक विश्वविद्यालय से यह अपेक्षित है कि अपने क्षेत्र से संबंधित किसी एक विभाषा का पाठ्यक्रम इन बिन्दुओं के आधार पर निर्धारित करें

(क) सन्दर्भित भाषा का इतिहास–विकास

(ख) उस विभाषा में रचित साहित्य का इतिहास

(ग) उस विभाषा के प्रमुख प्राचीन एवं अर्वाचीन रचनाकारों की स्तरीय कृतियों का संकलन

व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्रश्नों हेतु पाँच रचनाकारों के पाठ्यांशों का चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा। इनके अतिरिक्त द्रुतपाठ हेतु किन्हीं तीन रचनाकारों का चयन अपेक्षित है जिनमें से दो पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे–

इस प्रश्नपत्र में निम्नलिखित में से किसी एक भाषा–साहित्य का पठन–पाठन अपेक्षित है –

ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी, मैथिली, बुन्देली, छत्तीसगढ़ी, कुमाऊँनी, गढ़वाली, हरियाणवी, दक्खिनी हिन्दी।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३०% अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : ३०% अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम

वैकल्पिक पाठ्यक्रम -२

प्रादेशिक भाषा-साहित्य

प्रस्तावना

भारत बहुभाषी देश है। संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्प्रति १८ प्रादेशिक भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। ये सब हिन्दी की भगिनी भाषाएँ हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से सभी भारतीय भाषाओं में अद्‌भुत साम्य है। इन सबके सर्वांग परिचय द्वारा ही अखण्ड भारतीयता और एक समेकित भारतीय साहित्य की अवधारणा फलीभूत हो सकती है। अस्तु, हिन्दीतर राज्य के हिन्दी विद्यार्थी से अपेक्षित है कि वह हिन्दी भाषा और साहित्य के साथ–साथ अपनी प्रादेशिक भाषा में रचित साहित्य का भी सामान्य परिचय अर्जित करे।

प्रादेशिक भाषाओं में जिनका साहित्य वस्तुतः बहुत समृद्ध है और हिन्दी भाषा साहित्य का पूरक है, उनमें निम्नांकित बारह भाषाएँ निर्विवाद रूप से अग्रगण्य हैं। हिन्दीतर राज्यों के विश्वविद्यालयों से अपेक्षित है कि वे अपनी प्रादेशिक भाषा के वैशिष्ट्य, उसमें रचित साहित्य, प्रमुख रचनाकार तथा भाषा के विशिष्ट प्रदेय को दृष्टि में रखते हुए इस प्रश्नपत्र का गठन निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर करें :

(क) भाषा का इतिहास

(ख) साहित्य का इतिहास

(ग) रचनाकार और उनकी प्रतिनिधि रचनाएँ

व्याख्या एवं विवेचन के लिए ५ प्रतिनिधि रचनाकारों के पाठ्यांशों का चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा। इनके अतिरिक्त द्रुतपाठ हेतु किन्हीं तीन रचनाकारों का चयन अपेक्षित है जिनमें से किन्हीं दो पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे।

संस्तुत प्रादेशिक भाषाएँ

असमिया, उड़िया, बंगला, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, मराठी, मलयालम, सिन्धी।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३०% अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : ३०% अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम

वैकल्पिक पाठ्यक्रम -३

राजभाषा प्रशिक्षण

प्रस्तावना

कार्यालयी हिन्दी का एक नया स्वरूप इधर विकसित हुआ है। इसका व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त कर लेने पर रोज़गार की संभावनाओं में अभिवृद्धि होगी और राजभाषा का स्तरोन्नयन भी होगा।

पाठ्यविषय

- प्रशासन –व्यवस्था और भाषा।
- भारत की बहुभाषिकता और एक संपर्क भाषा की आवश्यकता।
- राजभाषा (कार्यालयी हिन्दी) की प्रकृति।
- राजभाषा विषयक सांविधानिक प्रावधान –
  राजभाषा–प्रावधान (अनुच्छेद ३४३ से ३५१ तक), राष्ट्रपति के आदेश (१९५२, १९५५, १९६०), राजभाषा अधिनियम १९६३ (यथा संशोधित १९६७), राजभाषा संकल्प (१९६८) (यथानुमोदित १९६९), राजभाषा नियम १९७६, द्विभाषी नीति और त्रिभाषा सूत्र। हिंदीतर राज्यों के प्रशासनिक क्षेत्रों में हिंदी की स्थिति। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी। हिंदी के प्रचार–प्रसार में विभिन्न हिंदी संस्थाओं की भूमिका। हिंदी और देवनागरी लिपि के मानकीकरण की समस्या।
- राजभाषा का अनुप्रयोगात्मक पक्ष : हिंदी आलेखन, टिप्पण, संक्षेपण तथा पत्रचार ।
- कार्यालय अभिलेखों के हिंदी अनुवाद की समस्या।
- हिंदी कम्प्यूटीकरण।
- हिंदी संकेताक्षर और कूटपद निर्माण।
- हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी पारिभाषिक शब्दावली।
- केंद्र एवं राज्य शासन के विभिन्न मंत्रलयों में हिंदीकरण की प्रगति।
- बैंकिंग, बीमा और अन्य वाणिज्यिक क्षेत्रों में हिंदी अनुप्रयोग की स्थिति।
- विधिक क्षेत्र में हिंदी।
- रेलवे, सेना और पुलिस विभाग में हिन्दी।
- सूचना प्रौद्योगिकी (संचार माध्यमों) के परिप्रेक्ष्य में हिंदी और देवनागरी लिपि।
- भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी का भविष्य।

अंक विभाजन :

३ आलोचनात्मक प्रश्न : = ४५% अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न = २०% अंक

१५ वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न = १५% अंक

कार्यालयी हिंदी–प्रायोगिक कार्य = २०% अंक

बी.ए. प्रतिष्ठा (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम

वैकल्पिक पाठ्यक्रम -४

संचार माध्यम लेखन

प्रस्तावना

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गयी है। हिन्दी भाषा और साहित्य का इन माध्यमों में अधिकाधिक स्तरीय प्रयोग तभी हो सकता है जब इन दृश्य–श्रव्य माध्यमों से संबंधित विधाओं का व्यवस्थित प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया जाए। यह पाठ्यक्रम अत्यंत रोज़गारपरक है।

पाठ्यविषय

- माध्यमोपयोगी लेखन का स्वरूप और प्रमुख प्रकार।
- हिन्दी माध्यम लेखन का संक्षिप्त इतिहास।
- रेडियो नाटक की प्रविधि।
- रंग नाटक, पाठ्यनाटक और रेडियो नाटक का अंतर।
- रेडियो नाटक के प्रमुख भेद – रेडियो धारावाहिक, रेडियो रूपांतर, रेडियो फैन्टेसी, संगीत रूपक, आलेख रूपक (डॉक्यूमेंट्री फीचर)।
- टी.वी. नाटक की तकनीक। टेली ड्रामा, टेली फिल्म, डॉक्यू ड्रामा तथा टी.वी. धारावाहिक में साम्य–वैषम्य। संचार माध्यम के अन्य विविध रूप।
- साहित्यिक विधाओं की दृश्य–श्रव्य रूपांतरण–कला। इलैक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा प्रसारित समाचारों के संकलन–संपादन और प्रस्तुतीकरण की प्रविधि।
- संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित विज्ञापनों की भाषा।
- विज्ञापन फिल्मों की प्रविधि।
- संचार माध्यमों की भाषा।
- हिंदी के समक्ष आधुनिक जनसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी की चुनौतियाँ।

३ आलोचनात्मक प्रश्न : ४५% अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न : २०% अंक

१५ वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : १५% अंक

माध्यमोपयोगी लेखन –प्रायोगिक कार्य = २०% अंक

एम.ए. (हिन्दी)

पाठ्यक्रम

एम.ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र-१
प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

प्रस्तावना

हिन्दी के आदिकालीन काव्य अपनी पृष्ठभूमि में अपभ्रंश के अवदान को पूरी तरह समेटे हुए हैं। प्रबंध, कड़वकबद्ध, मुक्तक आदि काव्यरूपों में रचित और अपभ्रंश, अवहट्ट एवं देशी भाषा में अभिव्यंजित आदिकालीन साहित्य की परवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय एवं सक्षम भूमिका रही है। इसके अध्ययन के बिना किसी भी काल का वास्तविक मूल्यांकन संभव नहीं है। पूर्वमध्यकालीन (भक्तिकालीन) काव्य लोक–जागरण और लोकमंगल का नवीन स्वर लेकर आया। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है। उत्तरमध्यकालीन (रीतिकाल) काव्य अपनी कलात्मक अभिव्यंजना में बेजोड़ है। इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग की धड़कनों को समग्रता में समझने के लिए अनिवार्य है।

इस प्रश्नपत्र में संस्तुत ८ कवियों में से कोई ६ कवि पठनीय हैं। उनकी कालजयी कृतियों का उल्लेख यहाँ कर दिया गया है। व्याख्यार्थ निश्चित पाठ्यांश संबंधित विश्वविद्यालय निर्धारित करेंगे। द्रुतपाठ के रूप में अध्ययन के लिए २० कवि रखे गए हैं जिनमें से किन्हीं १० का चयन अपेक्षित है। उनमें से किन्हीं पाँच पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँ ताकि परीक्षार्थी छोड़–छोड़कर न पढ़े बल्कि पूरे पाठ्यवृत्त का अध्ययन करे।

पाठ्यविषय

व्याख्या एवं विवेचना के लिए निम्नांकित ८ कवियों में से किन्हीं ६ कवियों का अध्ययन किया जाएगा—

१ **चंदबरदायी** : पृथ्वीराज रासो, संपा॰ आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ॰ नामवर सिंह (कोई एक समय)

२ **विद्यापति** : विद्यापति पदावली, संपा॰ रामवृक्ष बेनीपुरी (कोई २५ पद)

३ **कबीर** : कबीर ग्रंथावली, संपा॰ डॉ॰श्यामसुंदर दास (विभिन्न अंगों से चयनित १०० साखियाँ तथा २५ पद)

४ **जायसी** : पद्मावत, संपा॰ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (कोई २ खण्ड)

५ **सूरदास** : भ्रमरगीत सार, संपा॰ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, (कोई ५० पद)

६ **तुलसीदास** : रामचरित मानस (गीताप्रेस) (किसी एक काण्ड के ५० दोहे–चौपाइयाँ)

७ **घनानंद** : घनआनंद कवित्त, संपा॰ आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र (कोई २५छंद)

८ **बिहारीलाल** : बिहारी रत्नाकर संपा॰ जगन्नाथदास रत्नाकर (कोई १००दोहे)

द्रुत पाठ हेतु निम्नांकित कवियों में से किन्हीं दस कवियों का चयन संबंधित विश्वविद्यालय करेंगे। इनमें से किन्हीं पाँच पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे।

सरहपाद, गोरखनाथ, हेमचंद्र, अब्दुर्रहमान, अमीर खुसरो, विद्याधर, नन्ददास, दादू, मीराबाई, रैदास, रहीम, रसखान, केशव, नामदेव, देव, मतिराम, भूषण, सेनापति, पद्माकर, गुरु गोविन्दसिंह।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३x१० = ३० अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : २x१५ = ३० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र-२
आधुनिक हिन्दी काव्य

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी काव्य पुनर्नवा के रूप में नवीन भावभूमि एवं वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। आधुनिकता, इहलौकिकता, विश्वजनीनता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। उपेक्षित विषय भी यहाँ सार्थक एवं प्रासंगिक हो गए। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध से अद्यावधि तक की संवेदनाएँ, भावनाएँ एवं नूतन विचार सरणियाँ इसमें अभिव्यक्त हुई हैं। मुकम्मल मनुष्य इसमें अभिव्यंजित हुआ है। विविध धाराओं में प्रवहमान आधुनिक हिन्दी काव्य प्रेरणा और ऊर्जा का अजस्र स्रोत है। अतः संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है। इस प्रश्नपत्र में संस्तुत ८ कवियों में से कोई ६ कवि पठनीय हैं। व्याख्यार्थ पाठ्यांश संबंधित विश्वविद्यालय निर्धारित करेंगे। व्याख्या और विवेचना के लिए किन्हीं ६ कवियों का अध्ययन किया जाएगा –

पाठ्यविषय

- **मैथिलीशरण गुप्त** : साकेत (नवम सर्ग) अथवा अन्य कोई दो सर्ग।
- **जयशंकर प्रसाद** : कामायनी (चिन्ता, श्रद्धा, इड़ा, लज्जा, काम, रहस्य में से कोई तीन सर्ग)
- **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** : राम की शक्तिपूजा, तुलसीदास के १०छंद अथवा सरोज स्मृति एवं कुकुरमुत्ता
- **सुमित्रानंदन पंत** : परिवर्तन, नौका विहार, एक तारा, हिमाद्रि, संध्या के बाद, मौन निमंत्रण, अलमोड़े का वसंत, सोनजुही, आ धरती कितना देती है, शीर्षक कविताओं में से कोई ५ कविताएँ
- **रामधारी सिंह 'दिनकर'** : उर्वशी अथवा कुरुक्षेत्र (कोई एक अंक)
- **स.ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय'** : नदी के द्वीप, असाध्य वीणा, बावरा अहेरी तथा पाँच अन्य कविताएँ
- **ग.मा. मुक्तिबोध** : अँधेरे में अथवा कोई तीन लम्बी कविताएँ
- **नागार्जुन** : कोई १० कविताएँ

द्रुतपाठ हेतु निम्नांकित कवियों में से किन्हीं दस कवियों का चयन संबंधित विश्वविद्यालय करेंगे। इनमें से किन्हीं पाँच पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे –

१. श्रीधर पाठक २. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', ३. जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ४. महादेवी वर्मा ५. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ६. हरिवंशराय बच्चन, ७. केदारनाथ अग्रवाल, ८. त्रिलोचन शास्त्री ९. गिरिजाकुमार माथुर, १०. भवानीप्रसाद मिश्र ११. शमशेर बहादुर सिंह १२. श्रीनरेश मेहता, १३ धर्मवीर भारती १४ रघुवीर सहाय १५. कुँवर नारायण १६ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, १७ धूमिल १८. दुष्यन्त कुमार, १९. जगदीश गुप्त, २०. अशोक वाजपेयी।

अंक विभाजन

३ व्याख्याएँ : ३x१० = ३० अंक
२ आलोचनात्मक प्रश्न : २x१५ = ३० अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र-३
आधुनिक गद्य साहित्य

प्रस्तावना

आधुनिक काल में गद्य साहित्य को अभूतपूर्व सफलता मिली है। यह मानव–मन और मस्तिष्क की अभिव्यक्ति का सशक्त एवं अनिवार्य माध्यम बन गया है। मनुष्य का राग–विराग, तर्क–वितर्क तथा चिंतन–मनन जिस रागात्मकता के साथ कौशलपूर्ण ढंग से गद्य में अभिव्यंजित होता है, वैसा अन्य साहित्यांग में नहीं। आधुनिक काल में गद्य के विविध रूपों का विकास इस तथ्य का साक्षी है कि प्रौढ़ मन–मस्तिष्क की पूर्ण अभिव्यक्ति गद्य में ही संभव है। निबंध गद्य का प्रौढ़–शक्तिशाली प्रतिरूप, उसकी वैयक्तिक एवं स्वातंत्र्य चेतना का विश्वसनीय प्रतिनिधि है। नाटक, उपन्यास, कहानी तथा अन्य विविध विधाओं के रूप में गद्य साहित्य वामन से विराट बन गया है। आज मनुष्य को उसकी प्रकृति, परिवेश, परिस्थिति तथा चिंतन की विकास–प्रक्रिया के साथ सहज प्रामाणिक रूप में गद्य के माध्यम से ही जाना जा सकता है। अतः इसका अध्ययन अनिवार्य है। इस प्रश्नपत्र में २ नाटक, २ उपन्यास, ७ निबंध, ७ कहानियाँ एवं १ चरितात्मक कृति पठनीय हैं। इनका चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा।

पाठ्यविषय

व्याख्या एवं विवेचन के लिए निर्धारित :

१. स्कन्दगुप्त <u>अथवा</u> चन्द्रगुप्त (जयशंकर प्रसाद)

२. आषाढ़ का एक दिन <u>अथवा</u> आधे अधूरे (मोहन राकेश)

३. गोदान (प्रेमचंद) <u>अथवा</u> शेखर : एक जीवनी (भाग १ एवं २: अज्ञेय)

४. बाणभट्ट की आत्मकथा (आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी) <u>अथवा</u> मैला आँचल (फणीश्वरनाथ रेणु)

५. **निबंध संकलन :** निम्नलिखित १० निबंधकारों में से किन्हीं ७ निबंधकारों के श्रेष्ठ निबंधों का अध्ययन – बालकृष्ण भट्ट, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामवृक्ष बेनीपुरी, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. रामविलास शर्मा, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, हरिशंकर परसाई।

६. **कहानी संकलन :** निम्नलिखित १० कहानीकारों में से किन्हीं ७ कहानीकारों की श्रेष्ठ कहानियों का अध्ययन – चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद, जैनेन्द्र, धर्मवीर भारती, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, राजेन्द्र यादव।

७. पथ के साथी (महादेवी वर्मा) <u>अथवा</u> आवारा मसीहा (विष्णु प्रभाकर)

द्रुत पाठ हेतु १० नाटककार, १० उपन्यासकार, १० निबंधकार, १० कहानीकार और ५ स्फुट गद्य विधाओं के रचनाकार रखे गये हैं। इनमें प्रत्येक विधा से संबंधित ५–५ गद्यकारों का चयन संबंधित विश्वविद्यालय करेगा और प्रत्येक विधा से संबंधित १–१ लघूत्तरी प्रश्न पूछा जाएगा।

- **नाटककार :** भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, लक्ष्मीनारायण मिश्र, डॉ॰ रामकुमार वर्मा, भुवनेश्वर, उपेन्द्रनाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर, जगदीशचन्द्र माथुर, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण लाल, शंकर शेष।
- **उपन्यासकार :** जैनेन्द्र, राहुल सांकृत्यायन, भगवतीचरण वर्मा, यशपाल, अमृतलाल नागर, रामदरश मिश्र, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, बालशौरि रेड्डी, मन्नू भंडारी।
- **निबंधकार :** भारतेंदु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, बालमुकुन्द गुप्त, बाबू श्यामसुन्दर दास, शिवपूजन सहाय, सरदार पूर्ण सिंह, डॉ॰ नगेन्द्र, डॉ॰ इन्द्रनाथ मदान, डॉ॰ विश्वनाथ अय्यर।
- **कहानीकार :** बंग महिला, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', रांगेय राघव, अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु, मुक्तिबोध, शिवप्रसाद सिंह, भीष्म साहनी, अमरकांत।
- **स्फुट ग्रंथ :** १. अमृत राय(कलम का सिपाही); २. शिवप्रसाद सिंह (उत्तरयोगी); ३. हरिवंशराय बच्चन (क्या भूलूँ क्या याद करूँ); ४. राहुल सांकृत्यायन (घुमक्कड़ शास्त्र) ५. माखनलाल चतुर्वेदी (साहित्य देवता)।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३x१० = ३० अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : २x१५ = ३० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र-४
भाषाविज्ञान एवं हिन्दी भाषा

प्रस्तावना

साहित्य आद्यंत एक भाषिक निर्मिति है। साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान अपरिहार्य है। भाषाविज्ञान भाषा की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रूप में भाषिक इकाइयों तथा भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों पर उनके अंतस्संबंधों के विन्यास को आलोकित कर न केवल अध्येता को भाषिक अंतर्दृष्टि देता है अपितु भाषा–विषयक विवेचन के लिए एक निरूपक भाषा भी प्रदान करता है। मूल भाषा व्यवस्था पर आरोपित द्वितीयक साहित्यिक व्यवस्था की भाषिक प्रकृति की स्वीकृति, प्राचीन भारतीय एवं अधुनातन पाश्चात्य साहित्य चिंतन में समान रूप से लक्षणीय है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भाषा के साहित्येतर, प्रयोजनमूलक रूपों के अध्ययन में भी भाषा वैज्ञानिक चिंतन का लाभ उतना ही महत्त्वपूर्ण है।

भाषावैज्ञानिक आधार पर हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक विकासक्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक स्वरूप, विविधरूपता तथा हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाओं विषयक जानकारी एवं देवनागरी के वैशिष्ट्य, विकास और मानकीकरण का विवरण हिन्दी के अध्येता के लिए अत्यंत उपयोगी है।

पाठ्यविषय

(क) भाषा विज्ञान

- **भाषा और भाषाविज्ञान** : भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा–व्यवस्था और भाषा–व्यवहार, भाषा–संरचना और भाषिक–प्रकार्य। भाषाविज्ञान : स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ – वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।
- **स्वनप्रक्रिया** : स्वनविज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वागवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन। स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण।
- **व्याकरण** : रूपप्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ, रूपिम की अवधारणा और भेद : मुक्त–आबद्ध, अर्थदर्शी और संबंधदर्शी, संबंधदर्शी रूपिम के भेद और प्रकार्य। वाक्य की अवधारणा, अभिहितान्वयवाद और अन्विताभिधानवाद, वाक्य के भेद, वाक्य–विश्लेषण, निकटस्थ–अवयव विश्लेषण, गहन–संरचना और बाह्य–संरचना।
- **अर्थविज्ञान** : अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ–परिवर्तन।
- **साहित्य और भाषा-विज्ञान** : साहित्य के अध्ययन में भाषा–विज्ञान के अंगों की उपयोगिता।

(ख) हिन्दी भाषा

- **हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :** प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ – वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ – पालि; प्राकृत – शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण।
- **हिन्दी का भौगोलिक विस्तार :** हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ। खड़ीबोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।
- **हिन्दी का भाषिक स्वरूप :** हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था – खंड्य, खंड्येतर। हिन्दी शब्द रचना – उपसर्ग, प्रत्यय, समास। रूपरचना – लिंग, वचन और कारक–व्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियारूप। हिन्दी वाक्य–रचना : पदक्रम और अन्विति।
- **हिन्दी के विविध रूप :** संपर्क–भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी, माध्यम–भाषा, संचार–भाषा; हिन्दी की सांविधानिक स्थिति।
- **हिन्दी में कंप्यूटर सुविधाएँ :** आंकड़ा–संसाधन और शब्द–संसाधन, वर्तनी–शोधक, मशीनी अनुवाद, हिन्दी भाषा–शिक्षण।
- **देवनागरी लिपि :** विशेषताएँ और मानकीकरण।

अंक विभाजन :

भाषाविज्ञान (२ आलोचनात्मक प्रश्न) : २x१५ = ३० अंक

हिन्दी भाषा (२ आलोचनात्मक प्रश्न) : २x१५ = ३० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र-५
काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

प्रस्तावना

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविक परख की जा सके। सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता में समझने और जाँचने–परखने के लिए भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी के निजी साहित्यालोचन का अध्ययन समीचीन है।

पाठ्यविषय

(क) **संस्कृत काव्यशास्त्र** : काव्य–लक्षण, काव्य–हेतु, काव्य–प्रयोजन, काव्य के प्रकार।

- **रस-सिद्धांत** : रस का स्वरूप, रस–निष्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा।
- **अलंकार-सिद्धांत** : मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।
- **रीति-सिद्धांत** : रीति की अवधारणा, काव्य–गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।
- **वक्रोक्ति-सिद्धांत** : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।
- **ध्वनि-सिद्धांत** : ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि–सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत–व्यंग्य, चित्र–काव्य।
- **औचित्य-सिद्धांत**: प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद।

(ख) **पाश्चात्य काव्यशास्त्र**

- **प्लेटो** : काव्य–सिद्धांत।
- **अरस्तू** : अनुकरण–सिद्धांत; त्रासदी–विवेचन।
- **लोंजाइनस** : उदात्त की अवधारणा।
- **ड्राइडन** के काव्य–सिद्धांत।
- **वर्ड्सवर्थ** : काव्य–भाषा का सिद्धांत।
- **कॉलरिज** : कल्पना–सिद्धांत और ललित–कल्पना।
- **मैथ्यू आर्नल्ड** : आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य।
- **टी.एस. इलियट** : परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ समीकरण, संवेदनशीलता का असाहचर्य।

- **आई. ए. रिचर्ड्स :** रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना।
- **सिद्धांत और वाद :** आभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववाद।
- **आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ :** संरचनावाद, शैलीविज्ञान, विखंडनवाद, उत्तर–आधुनिकतावाद।

(ग) **हिन्दी कवि-आचार्यों का काव्यशास्त्रीय चिंतन :**

- लक्षण–काव्य–परंपरा एवं कवि–शिक्षा।

(घ) **हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ :**

- शास्त्रीय, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, मनोविश्लेषणवादी, सौंदर्यशास्त्रीय, शैलीवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय।

(ङ) **व्यावहारिक समीक्षा :** प्रश्नपत्र में पूछे गए किसी काव्यांश की स्वविवेक के अनुसार समीक्षा।

अंक विभाजन

संस्कृत काव्यशास्त्र १ आलोचनात्मक प्रश्न : १x१५ = १५ अंक

पाश्चात्य काव्यशास्त्र १ आलोचनात्मक प्रश्न : १x१५ = १५ अंक

हिन्दी काव्यशास्त्र १ आलोचनात्मक प्रश्न : १x१५ = १५ अंक

व्यावहारिक समीक्षा = १५ अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र-६
हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रस्तावना

किसी भी देश के जनमानस की मनोवृत्ति, दशा एवं संवेदना के विविध स्वरूपों का संचित रूप वहाँ के साहित्य में परिलक्षित होता है। सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न परिस्थितियों के कारण, चित्तवृत्तियों में परिवर्तन होता है, फलतः साहित्यिक रूपों में भी बदलाव आ जाता है। इस बदली हुई विकास प्रक्रिया को साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही देखा–परखा जा सकता है। हिन्दी क्षेत्र की परिस्थितियों सें कमोबेश पूरा भारत प्रभावित होता रहा है, जिसकी गूँज हिन्दी साहित्य में प्रतिध्वनित है। आठवीं–नवीं शताब्दी से लेकर आज तक के विकास परिदृश्य के साथ साहित्यिक सृजनशीलता के विविध रूपों, प्रवृत्तियों और भाषा–शैलियों का ज्ञान हिन्दी साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही किया जा सकता है। अतः इसका अध्ययन सर्वथा सार्थक एवं समीचीन है।

पाठ्यविषय

- इतिहास–दर्शन और साहित्येतिहास।
- हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा, आधारभूत सामग्री और साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ।
- हिन्दी साहित्य का इतिहास : काल–विभाजन, सीमा–निर्धारण और नामकरण।
- हिन्दी साहित्य : आदिकाल की पृष्ठभूमि, सिद्ध और नाथ–साहित्य, रासो–काव्य, जैन–साहित्य।
- हिन्दी साहित्य के आदिकाल का ऐतिहासिक परिदृश्य, साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, काव्यधाराएँ, गद्य साहित्य, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ।
- पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक–चेतना एवं भक्ति–आंदोलन, विभिन्न काव्यधाराएँ तथा उनका वैशिष्ट्य।
- प्रमुख निर्गुण संत कवि और उनका अवदान।
- भारत में सूफी मत का विकास तथा प्रमुख सूफी कवि और काव्यग्रंथ, सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति एवं लोकजीवन के तत्व।
- राम और कृष्ण काव्य, रामकृष्ण काव्येतर काव्य, भक्तीतर काव्य, प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्ट्य। भक्तिकालीन गद्य–साहित्य।
- उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल–सीमा और नामकरण, दरबारी संस्कृति और लक्षण–ग्रंथों की परंपरा, रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त), प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ, प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाएँ। रीतिकालीन गद्य साहित्य।

- आधुनिककाल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि; सन् १८५७ई. की राजक्रांति और पुनर्जागरण।
- भारतेंदु युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
- द्विवेदी युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
- हिन्दी स्वच्छंदतावादी चेतना का अग्रिम विकास–छायावादी काव्य: प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
- उत्तरछायावादी काव्य की विविध प्रवृत्तियाँ – प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, नवगीत, समकालीन कविता। प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
- हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज़ आदि) का विकास।
- हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास।
- दक्खिनी हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त परिचय।
- उर्दू साहित्य का संक्षिप्त परिचय।
- हिन्दीतर क्षेत्रों तथा देशान्तर में हिन्दी भाषा और साहित्य।

अंक विभाजन :

४ आलोचनात्मक प्रश्न ४x१५ = ६० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र-७
प्रयोजनमूलक हिन्दी

प्रस्तावना

भाषा मानव जीवन की अनिवार्य सामाजिक वस्तु और व्यावहारिक चेतना है जिसके दो मुख्य आयाम या प्रकार्य हैं – सौन्दर्यपरक और प्रयोजनपरक। भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन–व्यवहार से है और व्यक्तिपरक होकर भी जो समाज–सापेक्ष सेवा माध्यम (सर्विस टूल्स) के रूप में प्रयुक्त होती है। उत्तरआधुनिक काल में जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रें में उपयोग की जाने वाली प्रयोजनमूलक हिन्दी का अध्ययन अति अपेक्षित है। इसके विविध आयामों से न केवल रोजगार या जीविका की समस्या हल होगी अपितु राष्ट्र भाषा तथा राजभाषा का संस्कार भी दृढ़ होगा।

पाठ्यविषय

खण्ड क : कामकाजी हिन्दी

- हिन्दी के विभिन्न रूप –– सर्जनात्मक भाषा,संचार भाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा
- कार्यालयी हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य : प्रारूपण, पत्र लेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण
- पारिभाषिक शब्दावली – स्वरूप एवं महत्त्व, पारिभाषिक शब्दावली – निर्माण के सिद्धांत।
- ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली (निर्धारित शब्द)

हिन्दी कंप्यूटिंग

- कंप्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र वेब पब्लिशिंग का परिचय
- इंटरनेट संपर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख–रखाव एवं इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र
- वेब पब्लिशिंग
- इंटर एक्सप्लोइट अथवा नेटस्केप
- लिंक, ब्राउजिंग, ई मेल भेजना/प्राप्त करना, हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल, डाउनलोडिंग व अपलोडिंग, हिन्दी सॉफ्टवेयर, पैकेज।

खण्ड ख : पत्रकारिता

- पत्रकारिता : स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार
- हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास

- समाचार लेखन कला
- संपादन के आधारभूत तत्व
- व्यावहारिक प्रूफ़ शोधन
- शीर्षक की संरचना, लीड, इंट्रो एवं शीर्षक– संपादन
- संपादकीय–लेखन
- पृष्ठ–सज्जा
- साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता एवं प्रेस प्रबंधन
- प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार संहिता

खण्ड ग : मीडिया लेखन

- जनसंचार : प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियाँ
- विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप – मुद्रण, श्रव्य, दृश्य–श्रव्य, इंटरनेट।
- श्रव्य माध्यम (रेडियो)

  मौखिक भाषा की प्रकृति। समाचार–लेखन एवं वाचन। रेडियो नाटक। उद्घोषणा लेखन। विज्ञापन लेखन। फीचर तथा रिपोर्ताज़।

- दृश्य–श्रव्य माध्यम (फिल्म; टेलीविज़न एवं वीडियो)

  दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति। दृश्य एवं श्रव्य सामग्री का सामंजस्य। पार्श्व वाचन (वायस ओवर)। पटकथा लेखन। टेली–ड्रामा/डॉक्यू ड्रामा, संवाद लेखन। साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण। विज्ञापन की भाषा।

- इंटरनेट : सामग्री सृजन (Content Creation)

खण्ड घ : अनुवाद : सिद्धांत एवं व्यवहार

- अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि
- हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका
- कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद
- जनसंचार माध्यमों का अनुवाद
- विज्ञापन में अनुवाद
- वैचारिक–साहित्य का अनुवाद
- वाणिज्यिक–अनुवाद

- वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनुवाद
- विधि–साहित्य की हिन्दी और अनुवाद
- व्यावहारिक–अनुवाद–अभ्यास
- कार्यालयी अनुवाद : कार्यालयी एवं प्रशासनिक शब्दावली, प्रशासनिक प्रयुक्तियाँ, पदनाम, विभाग आदि।
- पत्रों के अनुवाद
- पदनामों, अनुभागों, दस्तावेजों, प्रतिवेदनों के अनुवाद
- बैंक–साहित्य के अनुवाद का अभ्यास
- विधि–साहित्य के अनुवाद का अभ्यास
- साहित्यिक–अनुवाद के सिद्धांत एवं व्यवहार : कविता, कहानी, नाटक।
- सारानुवाद
- दुभाषिया प्रविधि
- अनुवाद पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन

अंक विभाजन :

४ आलोचनात्मक प्रश्न ४x१५ = ६० अंक

(प्रत्येक खण्ड से एक–एक)

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र-८
भारतीय साहित्य

प्रस्तावना

भारतीय भाषाओं में हिन्दी भाषा और साहित्य का स्थान अन्य प्रांतीय भाषाओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण है, इसलिए हिन्दी साहित्याध्ययन को अधिकाधिक गंभीर तथा प्रशस्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। एक समेकित भारतीय साहित्य की रूपरचना के लिए हिन्दी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से हिन्दी के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। तभी उनके ज्ञान–क्षितिज एवं सांस्कृतिक दृष्टि का विकास होगा। यही नहीं, इससे हिन्दी–अध्ययन का अंतरंग विस्तार भी होगा। इस प्रश्नपत्र के चार खण्ड होंगे। प्रत्येक खण्ड से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

पाठ्यविषय

प्रथम खण्ड

१. भारतीय साहित्य का स्वरूप
२. भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ
३. भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब
४. भारतीयता का समाजशास्त्र
५. हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति

द्वितीय खण्ड

इसके अंतर्गत हिन्दीतर साहित्य का अध्ययन अपेक्षित है, जो तीन वर्गों में विभाजित है –

१. दाक्षिणात्य भाषा वर्ग – मलयालम, तमिल, तेलुगु, कन्नड़
२. पूर्वांचल भाषा वर्ग – उड़िया, बँगला, असमिया, मणिपुरी
३. पश्चिमोत्तर भाषा वर्ग – मराठी, गुजराती, पंजाबी, कश्मीरी,उर्दू।

निर्देश

१. प्रत्येक विद्यार्थी इन १३ विकल्पों में से एक भाषा का चयन करेगा, बशर्ते वह भाषा उसकी अपनी क्षेत्रीय भाषा से भिन्न भाषा वाले वर्ग से संबंधित हो।
२. विद्यार्थी एक भाषा वर्ग (दक्षिणात्य/पूर्वांचल/पश्चिमोत्तर) में से किसी एक के साहित्य के इतिहास का अध्ययन करेगा।

तृतीय खण्ड

इस खण्ड के अंतर्गत तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है। इसमें द्वितीय खण्ड में निर्धारित किसी एक हिन्दीतर भाषा–साहित्य के साथ हिन्दी को जोड़कर अध्ययन करना होगा।

चतुर्थ खण्ड

इसके अंतर्गत ३ उपन्यास, ३ कविता संग्रह और ३ नाटक प्रस्तावित हैं। इनमें से किसी १ उपन्यास, १ काव्य–संग्रह और १ नाटक का चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा, बशर्ते वह कृति विश्वविद्यालय से सबंधित क्षेत्रीय भाषा की न हो। इन पुस्तकों से मात्र आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।

उपन्यास

१. एक इमली की कहानी (तमिल –सुन्दर रामास्वामी)

२. अग्निगर्भ (बंगला – महाश्वेता देवी)

३. मृत्युंजय (असमिया – वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य)

कविता संग्रह

१. कोच्चिन के दरख्त (मलयालम – के. जी. शंकरपिल्लै)

२. वर्षा की सुबह (उड़िया – सीताकान्त महापात्र)।

३. बीच का रास्ता नहीं होता (पंजाबी – पाश) ।

नाटक

१ घासीराम कोतवाल (मराठी – विजय तेन्दुलकर)

२ हयवदन (कन्नड – गिरीश कर्नाड)

३ जसमा ओड़न (गुजराती –शान्ता गांधी)

अंक विभाजन :

४ आलोचनात्मक प्रश्न ४x१५ = ६० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
(साहित्यिक वर्ग-क)
लोक-साहित्य

प्रस्तावना

हिन्दी जगत में विद्यमान विभाषाओं में अमूल्य लोक–साहित्य संपदा विद्यमान है। इसके संकलन संपादन सर्वेक्षण, प्रकाशन द्वारा ही अपनी मूल राष्ट्रीय संस्कृति को संरक्षित किया जा सकता है और हिन्दी का जनाधार बढ़ाया जा सकता है अस्तु, इसके अध्ययन की उपयोगिता निर्विवाद है।

पाठ्यविषय

इस प्रश्नपत्र में सैद्धांतिक अध्ययन के साथ संबंधित क्षेत्र के लोक–साहित्य का गहन अध्ययन अपेक्षित है तथा उससे संबंधित प्रायोगिक कार्य भी।

खण्ड-क

- लोक और लोक–वार्ता, लोक–वार्ता और लोक–विज्ञान।
- लोक–संस्कृति :अवधारणा, लोक–वार्ता और लोक–संस्कृति, लोक–संस्कृति और साहित्य।
- लोक–साहित्य : अवधारणा, संस्कृत वाङ्मय में लोकोन्मुखता।
- हिन्दी के आरंभिक साहित्य में लोकतत्व, वर्तमान अभिजात साहित्य और लोक–साहित्य का अंतःसंबंध। लोक–साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध।
- भारत में लोक–साहित्य के अध्ययन का इतिहास।
- हिन्दी लोक–साहित्य के विशिष्ट अध्येता। लोक–साहित्य की अध्ययन–प्रक्रिया एवं संकलन की समस्याएँ।
- लोक–साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण –

  लोक–गीत, लोक–नाट्य, लोक–कथा, लोक–गाथा, लोक–नृत्य–नाट्य, लोक–संगीत।
  लोक–गीत : संस्कार--गीत, व्रत–गीत, श्रम–गीत, ऋतु–गीत, जाति–गीत।
  लोक–नाट्य : रामलीला, रासलीला, कीर्तनियाँ, स्वांग, यक्षगान, भवाई संपेड़ा, विदेसिया, माच, भाँड़, तमाशा, नौटंकी, जात्र, कथकली।
- हिन्दी लोक–नाट्य की परंपरा एवं प्रविधि। हिन्दी नाटक और रंगमंच पर लोक नाट्यों का प्रभाव।
- लोक–कथा : व्रत–कथा, परी–कथा, नाग–कथा, बोध–कथा, कथानक–रूढ़ियाँ अथवा अभिप्राय।
- लोक–गाथा : ढोला–मारू, गोपीचन्द – भरथरी, लोरिकायन, नल–दमयंती, लैला–मंजनूँ, हीर–राँझा, सोहनी–महीवाल, लोरिक–चंदा, बगड़ावत, आल्हा–हरदौल।

- लोक–नृत्य–नाट्य।
- लोक–संगीत : लोकवाद्य तथा विशिष्ट लोक धुनें।
- लोक–भाषा : लोक सुभाषित, मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ।

खण्ड 'ख'

निम्नलिखित जनपदीय भाषाओं के लोक–साहित्य में से किसी एक का अध्ययन–

राजस्थानी, भोजपुरी, ब्रज, अवधी, बुन्देलखण्डी, हरियाणवी, खड़ीबोली, कुमाऊँनी, गढ़वाली, छत्तीसगढ़ी, बघेली, मालवी।

अंक विभाजन :

३ आलोचनात्मक प्रश्न ३x१५ = ४५ अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक
१५ वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न १५x१ = १५ अंक
प्रायोगिक कार्य (क्षेत्रीय लोक–साहित्य का संकलन) = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
(साहित्यिक वर्ग-ख)
जनपदीय भाषा और साहित्य

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य मात्र खड़ीबोली तक सीमित नहीं है। उसकी अनेक विभाषाओं में आज भी पर्याप्त साहित्य सृजन किया जा रहा है। प्राचीन साहित्य तो मुख्यतः विभाषाओं में ही प्राप्य है। इनका पृथक् अध्ययन कराने से इन विभाषाओं का उत्तरोत्तर विकास होगा।

पाठ्यविषय

इस प्रश्नपत्र में निम्नलिखित भाषाओं/विभाषाओं में रचित प्राचीन एवं अर्वाचीन साहित्य का अध्ययन प्रस्तावित है–

- राजस्थानी
- ब्रजभाषा
- अवधी
- भोजपुरी
- कुमाऊँनी
- गढ़वाली
- हरियाणवी
- छत्तीसगढ़ी

टिप्पणीः विभिन्न भाषा क्षेत्रों में स्थापित विश्वविद्यालय अपनी क्षेत्रीय भाषा/विभाषा का पाठ्यक्रम इन बिन्दुओं के आधार पर निर्धारित करेंगे :

- भाषा/विभाषा का इतिहास
- साहित्य का इतिहास
- विशिष्ट रचनाकार
- विशिष्ट कृतियाँ
- विशिष्ट युग प्रवृत्तियाँ

इनसे संबंधित व्याख्यात्मक एवं आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, साथ ही लघूत्तरी एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न भी।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३x१० = ३० अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : २x१५ = ३० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
(साहित्यिक वर्ग-ग)
रचनाकारों का विशेषाध्ययन

प्रस्तावना

हिन्दी के उन कालजयी रचनाकारों का विशेषाध्ययन करना आवश्यक है, जिन्होंने चिंतन और सर्जन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान किया है और जिनका लेखन आज भी प्रासंगिक है। इन रचनाकारों में हैं –

- कबीरदास
- मलिक मुहम्मद जायसी
- सूरदास
- गोस्वामी तुलसीदास
- भारतेंदु हरिश्चन्द्र
- जयशंकर प्रसाद
- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
- प्रेमचंद
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी।

उपर्युक्त सभी रचनाकार विभिन्न युगों के उन्नायक और विधा विशेष के शीर्षस्थ रचनाकार हैं, अस्तु इनके समग्र व्यक्तित्व–कृतित्व का सघन अध्ययन यहाँ अपेक्षित है। व्याख्या के लिए पाठ्यग्रंथों का परिसीमन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जा सकता है। इन प्रश्नों का अंक विभाजन इस प्रकार होगा:

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३x१० = ३० अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : २x१५ = ३० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
(साहित्यिक वर्ग-घ) विशिष्ट विधा का अध्ययन-१
हिन्दी उपन्यास

प्रस्तायना

हिन्दी गद्य की विधाओं में उपन्यास सर्वाधिक विकसित तथा लोकप्रिय है। सम्प्रति उसने शास्त्र का रूप धारण कर लिया है, अतः इस विधा का विस्तृत अध्ययन अपेक्षित है।

पाठ्यविषय

उपन्यास का स्वरूप, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, हिन्दी उपन्यास की प्रमुख शैलियाँ, हिंदी के प्रतिनिधि उपन्यासकारों का वस्तुशिल्पगत वैशिष्ट्य।

व्याख्या एवं विवेचना के लिए प्रस्तावित १० उपन्यासों में से संबंधित विश्वविद्यालय किन्हीं छह औपन्यासिक कृतियों का निर्धारण करेंगे–

१. रंगभूमि – प्रेमचंद
२. मृगनयनी – वृंदावनलाल वर्मा
३. त्यागपत्र – जैनेन्द्र
४. बलचनमा – नागार्जुन
५. झूठा सच –यशपाल
६. बूंद और समुद्र –अमृतलाल नागर
७. तमस –भीष्म साहनी
८. कब तक पुकारूँ – रांगेय राघव
९. अपने–अपने अजनबी – अज्ञेय
१०. आपका बंटी – मन्नू भंडारी

द्रुत पाठ हेतु निम्नलिखित उपन्यासों में से किन्हीं १०का अध्ययन प्रस्तावित है। इनमें से किन्हीं पाँच पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे –

परीक्षा गुरु (लाला श्रीनिवासदास), वोल्गा से गंगा (राहुल सांकृत्यायन), जहाज का पंछी (इलाचंद्र जोशी), वैशाली की नगरवधू (चतुरसेन शास्त्री), सागर लहरें और मनुष्य (उदयशंकर भट्ट), अनामदास का पोथा (हजारीप्रसाद द्विवेदी), सूरज का सातवाँ घोड़ा (धर्मवीर भारती), परती परिकथा (फणीश्वर नाथ रेणु), वे दिन (निर्मल वर्मा), राग दरबारी (श्रीलाल शुक्ल), नीला चाँद (शिवप्रसाद सिंह), मुझे चाँद चाहिए (सुरेन्द्र वर्मा), लौटे

हुए मुसाफिर (कमलेश्वर), आधा गाँव (राही मासूम रजा), चित्रलेखा (भगवतीचरण वर्मा), पहला गिरमिटिया (गिरिराज किशोर), अँधेरे बंद कमरे (मोहन राकेश), सारा आकाश (राजेन्द्र यादव), जल टूटता हुआ (रामदरश मिश्र), ज़िंदगीनामा (कृष्णा सोबती),धरती धन न अपना (जगदीश चन्द्र), इदन्नमम (मैत्रेयी पुष्पा), कलिकथा वाया बाई पास (अलका सरावगी)।

अंक विभाजन

३ व्याख्याएँ : ३x१० = ३० अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : २x१५ = ३० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
(साहित्यिक वर्ग-घ) विशिष्ट विधा का अध्ययन-२
हिन्दी आलोचना साहित्य

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य की कुछ विधाएँ इतनी विकसित हो गयी हैं कि उनके स्वतंत्र सघन अध्ययन के लिए पृथक वैकल्पिक प्रश्नपत्र की आवश्यकता है। हिन्दी आलोचना ऐसी ही एक विधा है। इसका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करके विद्यार्थी सफल आलोचक हो सकता है, जो हिन्दी पठन–पाठन का मूल प्रयोजन है।

पाठ्यविषय

भारतीय काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना के उदय की परिस्थितियाँ, प्रारंभिक हिन्दी आलोचना का स्वरूप, पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिन्दी आलोचना; हिन्दी आलोचना का ऐतिहासिक क्रम–विकास : शुक्लपूर्व हिन्दी आलोचना, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : सैद्धांतिक चिंतन एवं व्यावहारिक पक्ष, शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी आलोचना। हिन्दी के प्रमुख आलोचकों की आलोचनात्मक अवधारणाओं और पद्धतियों–प्रतिमानों का उनकी कृतियों के आलोक में गहन अध्ययन।

हिन्दी आलोचना की विविध प्रणालियाँ : काव्यशास्त्रीय, स्वच्छंदतावादी, मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणवादी, व्यक्तिवादी, सौंदर्यशास्त्रीय, प्रभाववादी, समाजशास्त्रीय, संरचनावादी, शैलीवैज्ञानिक, तुलनात्मक आलोचना।

व्याख्या एवं आलोचना हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रंथ –

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : त्रिवेणी
- आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी : 'कबीर'
- आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी : नया साहित्य : नये प्रश्न
- डॉ॰ नगेन्द्र – डॉ॰ नगेन्द्र के श्रेष्ठ निबन्ध
- डॉ॰ रामविलास शर्मा – भाषा और समाज

द्रुत पाठ हेतु निम्नलिखित में से किन्हीं दस आलोचकों का अध्ययन प्रस्तावित है। इनमें से किन्हीं पाँच पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे –

भारतेंदु हरिश्चन्द्र, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, मिश्रबंधु, डॉ॰ श्यामसुन्दर दास, गुलाबराय, डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र, पं. शान्तिप्रिय द्विवेदी, नलिनविलोचन शर्मा, डॉ॰ नामवरसिंह, डॉ॰ इन्द्रनाथ मदान, देवराज उपाध्याय, डॉ॰ रामस्वरूप चतुर्वेदी, डॉ॰ रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, डॉ॰ रमेश कुंतल मेघ, डॉ॰ चन्द्रकांत बांदिवडेकर।

अंक विभाजन :
३ व्याख्याएँ : ३x१० = ३० अंक
२ आलोचनात्मक प्रश्न : २x१५ = ३० अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

वैकल्पिक प्रश्नपत्र
(साहित्यिक वर्ग-घ) विशिष्ट विधा का अध्ययन-३
नाटक और रंगमंच

प्रस्तावना

नाटक साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है। यह श्रव्य एवं दृश्य दोनों रूपों को समेटे हुए है। नाटक प्रत्यक्ष, कल्पना एवं अध्यवसाय का विषय बन सत्य तथा कल्पना से समन्वित विलक्षण रूप धारण करके द्रष्टा एवं पाठक दोनों को मनोरंजन के साथ–साथ समाज–निर्माण एवं परिवर्तन की चेतना प्रदान करते हुए अपने साध्य में दृश्य होने के कारण सीधे रंगमंच से जुड़ा हुआ है जिसे विविध काव्य के अतिरिक्त ललित कलाएँ तथा कलाकार मिलकर आकार देते हैं। इसमें नाटककार, अभिनेता, संगीत, दृश्य–विधान, वेशभूषाकार आदि सभी का रचनात्मक सहयोग होता है। जीवन की विसंगतियों, विद्रूपताओं, उसकी विशिष्ट ऐतिहासिक, चारित्रिक, सांस्कृतिक विशेषताओं की व्यापक समझदारी के लिए इस सशक्त माध्यम का अध्ययन अनिवार्य है।

पाठ्यविषय

- नाटक और रंगमंच का स्वरूप
- नाट्योत्पत्ति संबंधी विविध मत
- नाट्य अध्ययन का स्वरूप
  - नाटक का विधागत वैशिष्ट्य
  - नाटक और रंगमंच का अंतःसंबंध
  - नाटक में दृश्य और श्रव्य तत्वों का समायोजन
- नाट्य–भेद
  - भारतीय रूपक–उपरूपकों के भेद (सामान्य परिचय)
  - पारम्परिक नाट्य–रूप : रामलीला, रासलीला, स्वांग, नौटंकी, माच, ख्याल, विदेसिया आदि।
  - पाश्चात्य नाटक (सामान्य परिचय)
- नाट्य–विधान : भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नाट्य तत्वों का विस्तृत विवेचन
- रंगमंच के प्रकार, रंगशिल्प, रंग संप्रेषण के विविध घटक (मूर्त एवं अमूर्त)
- विश्व के प्रमुख रंग चिंतक : भरत, स्तानिस्लाव्स्की, ब्रेख्त के अभिनय–सिद्धांत।
- हिन्दी नाटक और रंगमंच का संक्षिप्त इतिहास–विकास
  - नाटक का विकास : भारतेंदु युग, प्रसाद युग, स्वातंत्र्योत्तर काल, नया नाटक।
  रंगमंच : लोक–नाट्य (व्यावसायिक, अव्यावसायिक)
  - पारसी, पृथ्वी थियेटर, इप्टा, प्रमुख सरकारी रंग संस्थाएँ, नुक्कड़ नाटक।
- हिन्दी नाट्य–चिंतन – भारतेंदु, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश।

रंगमंच की दृष्टि से हिन्दी (मौलिक एवं अनूदित) नाटकों का विशिष्ट अध्ययन

निम्नलिखित १० नाट्य कृतियों में से किन्हीं ६ कृतियों का निर्धारण संबंधित विश्वविद्यालय करेगा, जिनसे संबंधित व्याख्याएँ तथा आलोचनात्मक प्रश्न भी पूछे जायेंगे –

1. भारत दुर्दशा – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
2. अजातशत्रु – जयशंकर प्रसाद
3. लहरों के राजहंस – मोहन राकेश
4. कोमल गांधार – डॉ॰ शंकर शेष
5. कौमुदी महोत्सव – डॉ॰ रामकुमार वर्मा
6. कोणार्क –जगदीश चन्द्र माथुर
7. एक सत्य हरिश्चन्द्र – डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल
8. अंधायुग –डॉ॰ धर्मवीर भारती
9. एक कंठ विषपायी – दुष्यंत कुमार
10. संशय की एक रात – श्रीनरेश मेहता

द्रुतपाठ हेतु निम्नलिखित में से किन्हीं १० नाटकों का अध्ययन प्रस्तावित है। इनमें से किन्हीं पाँच पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे –

मृच्छकटिक (शूद्रक, अनु. मोहन राकेश); पगला घोड़ा (बादल सरकार, अनु. प्रतिभा अग्रवाल); घासीराम कोतवाल (विजय तेंदुलकर); तुगलक (गिरीश कर्नाड, अनु. बच्चन); मैकबेथ (शेक्सपीयर, अनु० बच्चन); खड़िया का घेरा (ब्रेख्त, अनु० कमलेश्वर); गुड़िया का घर (इब्सन); बकरी (सर्वेश्वर); चरनदास चोर – (हबीब तनवीर); आठवाँ सर्ग (सुरेन्द्र वर्मा), इन्दरसभा (अमानत)।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३x१० = ३० अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : २x१५ = ३० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
(साहित्यिक वर्ग-ङ)
विशिष्ट युग प्रवृत्ति का अध्ययन-१
आदिकाल

प्रस्तावना

'हिन्दी साहित्य का आदिकाल' भाषा–साहित्य, काव्य–रूप, तथ्य–कल्पना, कथानक–रूढ़ि, छंद–शैली आदि सभी दृष्टियों से बड़ा महत्त्वपूर्ण काल है। अपने दायरे में अपभ्रंश की समस्त परंपरा समेट लेने के कारण यह प्रौढ़ता का काल है। इसकी महत्ता इसी से आँकी जा सकती है कि इसके अध्ययन के बिना किसी भी परवर्ती काल का सही मूल्यांकन संभव नहीं है। इसकी धर्मसाधना, नव्य भारतीय भाषाओं का आकार ग्रहण, आध्यात्मिक एवं इहलौकिक दृष्टिकोण और विभिन्न परिस्थितियाँ सभी प्रेरणा स्रोत हैं। इसके बिना दूसरे कालों को देखना जड़–तना विहीन पल्लवग्राही ज्ञान सिद्ध होगा। अतः हिन्दी साहित्य की मुकम्मल जानकारी के लिए 'हिन्दी साहित्य के आदिकाल' का अध्ययन अनिवार्य है।

पाठ्यविषय

- **अपभ्रंश-अवहट्ट की पृष्ठभूमि :** नव्य भारतीय भाषा की काव्य प्रवृत्तियाँ, सिद्ध–नाथ एवं जैनादि कवियों की मानववादी विचारधारा एवं साहित्यिक अवदान। मुक्तक–काव्य–परम्परा में प्रवहमान नीति, वीर, शृंगार तथा सुभाषितपरक दोहों का काव्यानुशीलन। पृथ्वीराज रासो में तथ्य और कल्पना। कथानक रूढ़ियों (मोटिव्स) का सौंदर्य विन्यास। विकसनशील महाकाव्य पृथ्वीराज रासो। 'कीर्तिलता' का काव्यरूप, काव्यबोध, तथ्यात्मक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि। भक्ति–आंदोलन में हिन्दीतर राज्यों के कवियों का योगदान।
- हिन्दी साहित्य का आदिकाव्य – नवमूल्यांकन

  व्याख्या एवं आलोचना के लिए निम्नलिखित में से किन्हीं छह कवियों का निर्धारण संबंधित विश्वविद्यालय करेगा जिन पर प्रश्न पूछे जाएंगे –
- संदेश रासक : अब्दुर्रहमान, संपा॰ हजारीप्रसाद द्विवेदी तथा डॉ॰ विश्वनाथ त्रिपाठी (मात्र दोहे)
- प्रबंध चिंतामणि (मुंज से संबंधित दोहे)।
- हेमचंद्र शब्दानुशासन (हेमचंद्र के दोहे) : कोई ५० दोहे।
- बीसलदेव रासो : नरपति नाल्ह – २५ छंद।
- गोरखबानी : संपा॰ डॉ॰ पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, २५ सबदी।
- पृथ्वीराज रासो : चन्दबरदायी, संपा॰ डॉ॰ माताप्रसाद गुप्त (कोई एक समय)

- कीर्तिलता : विद्यापति, संपा॰ डॉ॰ शिवप्रसाद सिंह (कोई एक पल्लव)
- राउलवेलि : संपा॰ डॉ॰ माताप्रसाद गुप्त।
- नामदेव की हिन्दी कविता : संपा॰ डॉ॰ भगीरथ मिश्र (कोई १५ पद)
- ढोलामारू रा दूहा (कोई २० छंद)।

द्रुतपाठ हेतु निम्नलिखित कवियों में से किन्हीं १० कवियों का अध्ययन प्रस्तावित है जिनमें से किन्हीं पाँच पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे –

प्राकृत पैंगलम् के कवि – विद्याधर, जज्जल, बब्बर, हरिब्रह्म, जिनपद्म सूरि, विनयचंद्र सूरि, शालिभद्र सूरि, नरपति नाल्ह, जगनिक, खुसरो, देवसेन, हिन्दी काव्यधारा– राहुल सांकृत्यायन' के 'अज्ञात कवि वृंद'।

अंक–विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३x१० = ३० अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : २x१५= ३० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ =२० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
साहित्यिक वर्ग 'ड'
विशिष्ट युग प्रवृत्ति का अध्ययन-२
भक्तिकाल

प्रस्तावना

अपने विशिष्ट अवदानों के कारण हिन्दी–साहिय का भक्तिकाल 'स्वर्णयुग' के नाम से अभिहित किया जाता है। अपनी पूर्ववर्ती समस्त साहित्यिक परंपरा को पचाकर उसे निखार देने के साथ ही इस काल ने अपना नया स्वर, नयी पहचान दी और नयी–नयी उद्‌भावनाएँ मुखरित की। यह लोक–जागरण का काल है। इसमें कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, मीराँ जैसी कालजयी महान क्रांतिकारी और लोकधर्मी सर्जकों का स्वर एक साथ गूँजा। सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना–सम्पन्न इन सजग–समर्थ कवियों ने रचनाधर्मिता को गगनचुंबी ऊँचाई दी। यहाँ जाति, वर्ण, सम्प्रदाय, ऊँच–नीच के भेदभाव मिटते नजर आते हैं और उनकी जगह समन्वय, शांति, सौहार्द्र, प्रेम, त्याग एवं करुणा की प्रतिष्ठापना होती है। मानव मूल्य के नये स्वर गुंजित होते हैं। साहित्य की उदात्तता, पावनता, गंभीरता, भावप्रवणता और कलात्मकता में यह काल अपना सानी नहीं रखता। यह जन और सुजन का साहित्य है। इस काल को जानना पूरी सामाजिक और सांस्कृतिक परंपरा को जानना–जुड़ना है। अतः भक्तिकाल का अध्ययन न केवल आवश्यक अपितु प्रासंगिक एवं अनिवार्य है।

पाठ्यविषय

भक्तिकाल की समय सीमा, काल विभाजन, नामकरण, निर्गुण, सगुण काव्यधाराएँ, ज्ञानमार्गी, प्रेममार्गी (सूफी), कृष्णभक्ति एवं रामभक्ति शाखाएँ, भक्तों की परंपरा, मध्यकालीन काव्यधाराओं की सामान्य प्रवृत्तियाँ।

भक्तिकाल के प्रमुख कवियों का व्यक्तित्व एवं साहित्यिक, सामाजिक–सांस्कृतिक अवदान। साहित्यिक धाराओं का वैशिष्ट्य। योगमार्ग और संत–भक्त कवि, भक्तीतर साहित्य की प्रवृत्तियाँ। विशिष्ट साहित्यकार तथा उनकी उपलब्धियाँ। भक्तिकालीन गद्य।

व्याख्या एवं आलोचना हेतु निम्नलिखित में से किन्हीं छह कवियों का निर्धारण संबंधित विश्वविद्यालय करेगा –

१ कबीर : संत काव्य (संग्रह) : संपा॰ परशुराम चतुर्वेदी, संत कबीर साहब प्रारंभ के ५०पद

२ रैदास : संत कांव्य (संग्रह) : संपा॰ परशुराम चतुर्वेदी (कोई २० पद)

३ जायसीः जायसी ग्रंथावली : संपा॰ रामचन्द्र शुक्ल (पद्मावत के कोई दो खण्ड, जो बीज पाठ्यक्रम से भिन्न हों)

४ मुल्ला दाउद : चन्दायन (प्रारंभ के २५ छंद)

५ सूरदास : संक्षिप्त सूरसागर (कोई २५ पद)

६ नन्ददास : महारास– रासपंचाध्यायी, नंददास ग्रंथावली, संपा॰ पं॰ उमाशंकर शुक्ल (सम्पूर्ण)

७ तुलसीदास : विनयपत्रिका, गीताप्रेस, गोरखपुर (कोई ५० छंद)

८ केशवदास– रामचन्द्रिका (पूर्वार्द्ध) संपा॰ लाला भगवानदीन

९ मीराँबाई : मीराँबाई की पदावली,संपा॰ परशुराम चतुर्वेदी (कोई २५ पद)

१० रसखान : सुजान रसखान – २५ सवैया

द्रुतपाठ हेतु निम्नलिखित कवियों में से किन्हीं दस कवियों का अध्ययन अपेक्षित है ––

स्वामी रामानंद, गुरु नानकदेव, दादू, रज्जब, सुन्दरदास, सहजोबाई, कुतुबन, मंझन, कुंभनदास, परमानंददास, हितहरिवंश, कृष्णदास, रहीम।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३x१० = ३० अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : २x१५ = ३० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
विशिष्ट युग प्रवृत्ति का अध्ययन-३
रीतिकाल

प्रस्तावना

जीवन के इहलौकिक पक्ष का संज्ञान भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि पारलौकिकता का द्वार यहीं से खुलता है। चार पुरुषार्थों में काम का एक स्तम्भ होना गहरे अर्थ की व्यंजना करता है। जैसे काम और कला घनीभूत भाव से जुड़े हैं, वैसे ही रति और रीति भी। जहाँ 'रति' मानव हृदय की मूल प्रवृत्ति है,वहीं 'रीति' उसे मनोवांछित अभिव्यंजना देती है। हिन्दी साहित्य का रीतिकाल इन्हीं मनोवृत्तियों से जुड़ा हुआ है। तत्युगीन परिस्थितियों के कारण प्रेम के शृंगारिक रूप की संपृक्ति बढ़ी। रसिकता और शास्त्रीयता का सुखद संयोग घटित हुआ। जीवन के मधुर पक्ष के साथ ही भक्ति को भी ठीक से समझने के लिए रीति अथवा शृंगारकाल का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

पाठ्यविषय

रीतिकालीन परिस्थितियाँ एवं परिवेश, प्रेरणास्रोत, नामकरण की समस्या,काल सीमा, विशिष्टताएँ, भाषा एवं शैली–अभिव्यंजना का स्वरूप – रस, छंद, अलंकार आदि काव्यांग ।

रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त कवियों की सौंदर्य चेतना। रीतीतर प्रवृत्तियाँ, रीतिकाल का नया मूल्यांकन।

व्याख्या एवं आलोचना हेतु निम्नलिखित कवियों में से किन्हीं छह कवियों का निर्धारण संबंधित विश्वविद्यालय करेगा , जिन पर प्रश्न पूछे जाएंगे –

- केशवदास : केशवग्रंथावली, संपा॰ आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (कोई ५० छंद)
- बिहारी : बिहारी बोधिनी, संपा॰ लाला भगवानदीन (कोई ५० दोहे)
- मतिराम : मतिराम ग्रंथावली, संपा॰ कृष्णबिहारी मिश्र (कोई २५ छंद)
- भूषण : भूषण ग्रंथावली, संपा॰ डॉ॰ भगीरथ दीक्षित (कोई २५ छंद)
- पद्माकर : पद्माकर ग्रंथावली, संपा॰ विश्वनाथप्रसाद मिश्र (कोई २५ छंद)
- द्विजदेव (मानसिंह), द्विजदेव ग्रंथावली संपा॰ विद्यानिवास मिश्र (कोई ५० छंद)
- घनानंद : घनानंद कवित्त, संपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र (कोई २५ छंद)
- सेनापति : कवित्त रत्नाकर, संपा॰ उमाशंकर शुक्ल (कोई २५ छंद)
- देव : देव ग्रंथावली, संपा॰ लक्ष्मीधर मालवीय, (कोई २५ छंद)
- गुरु गोविन्दसिंह : चण्डीचरित्र, संपा॰ ओमप्रकाश (कोई २५ छंद)

द्रुत पाठ हेतु निम्नलिखित में से किन्हीं १० कवियों का अध्ययन प्रस्तावित है जिनमें से किन्हीं पाँच पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे–

चिंतामणि, भिखारीदास, शेख आलम, बोधा (बुद्धिसेन), ठाकुर, गिरिधर कविराय, वृंद, कृपाराम, सोमनाथ, लाल, सूदन, दयाराम ।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३x१० = ३० अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : २x१५ = ३० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
विशिष्ट युग प्रवृत्ति का अध्ययन-४
छायावाद

प्रस्तावना

हिन्दी की विशाल साहित्यिक–परंपरा में भक्तिकाल के लोकजागरण के पश्चात् नवोन्मेष का विकास छायावाद में ही दिखाई पड़ा। छायावाद परंपरा की समस्त विकास–प्रक्रिया को समेटते हुए नयी–नयी भावभूमि और नये–नये रूप–विन्यास देने में मील का पत्थर सिद्ध हुआ। उसने अपनी साहित्यिक यात्रा पग–पग न चलकर छलाँग के द्वारा तय की। स्थूलता–इतिवृत्तात्मकता की जगह सूक्ष्मता, तथ्यता की जगह विराट कल्पना, सामाजिक–बोध की जगह व्यक्तित्व की स्वाधीनता, प्रकृति–साहचर्य, मानव–प्रेम, वैयक्तिक–प्रेम, उच्च नैतिक आदर्श, देश–भक्ति, राष्ट्रीय–स्वाधीनता एवं सांस्कृतिक–जागरण का नया स्वर छायावाद में मुखरित हुआ। छायावाद नूतन और मौलिक शक्ति का काव्य है। इसमें 'स्व' की आभ्यंतरिक शक्ति अभिव्यंजित हुई है जिसमें आत्मीयता, जीवन की लालसा, उच्चतर जीवन की आकांक्षा, त्याग, प्रेम आदि का संदेश निहित है। छायावाद हमें रस से प्लुत करते हुए उद्‌बुद्ध, सक्रिय और परिष्कृत बनाता है। प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी की सर्जना प्रकाश स्तम्भ जैसी है। छायावाद की छाया ग्रहण किये बिना शताब्दी की धड़कनों को समझने में हम असमर्थ होंगे। अतः इसका अध्ययन–मनन अति प्रासंगिक एवं अनिवार्य है।

पाठ्यविषय

निम्नांकित कवियों से संबंधित व्याख्यात्मक एवं आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे –

१ प्रसाद – लहर (अंतिम ३ लंबी कविताएँ)
२ निराला – अपरा (कोई १० कविताएँ)
३ पंत – चिदंबरा (कोई १० कविताएँ)
४ महादेवी – यामा (कोई १० गीत)
५ माखनलाल चतुर्वेदी – आधुनिक कवि (कोई १० गीत)
६ रामकुमार वर्मा – आधुनिक कवि (कोई १०.गीत)

द्रुत पाठ हेतु निम्नलिखित १० कवियों का अध्ययन प्रस्तावित है जिनमें से किन्हीं ५ पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे –

मुकुटधर पाण्डेय, मोहनलाल महतो वियोगी, हरिकृष्ण प्रेमी, जनार्दन झा द्विज, इलाचंद्र जोशी, उदयशंकर भट्ट, डॉ. नगेन्द्र, जानकीवल्लभ शास्त्री, विद्यावती कोकिल, सुमित्राकुमारी सिन्हा ।

अंक विभाजन :
३ व्याख्याएँ : ३x१० = ३० अंक
२ आलोचनात्मक प्रश्न : २x१५ = ३० अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
विशिष्ट युग प्रवृत्ति का अध्ययन-५
छायावादोत्तर काव्य

प्रस्तावना

छायावादी कृतित्व में यथार्थ और स्वप्न दोनों की समान संस्थिति थी। राष्ट्रीय–चेतना और सांस्कृतिक जागरण की प्रवृत्ति अपनी समस्त शक्ति–सामर्थ्य तथा कतिपय नवीन प्रयोगवादिता के साथ छायावादोत्तर–काव्य में विकसित होती रही। यहाँ प्रयोग और प्रगतिशीलता के स्वर जोर पकड़ते गए जिसके बीज–बिन्दु छायावाद में पड़ चुके थे। औद्योगीकरण के साथ–साथ शोषण की वृत्ति तथा अन्य सामाजिक विद्रूपताओं ने प्रगतिशील साहित्यांदोलनों को बढ़ावा दिया। नये मार्ग की अन्वेषी विचारधारा ने प्रयोगवादी काव्यधारा के रूप में अपने को विकसित किया। स्वतंत्रता के बाद मोहभंग की स्थिति ने जन्म लिया। स्वप्न अधूरे रहे, संकल्प टूटे। आक्रोश और विद्रोह की प्रवृत्ति व्यापक पैमाने पर परिलक्षित हुई। विज्ञान ने बौद्धिकता का विकास किया, फलस्वरूप नये–नये बिंब, प्रतीक एवं अभिव्यंजना–रूप विकसित हुए। अंतर्विरोधी स्थितियों ने मूल्य–विघटन, तनाव–संक्रमण, मोहभंग की स्थिति पैदा की, जिसकी अभिव्यंजना विविध रूपों में हुई। वर्तमान समस्याओं, संवेदनाओं की व्यापकता विश्वजनीन हो गई है। इस वैश्विक–संदर्भ की जानकारी और समझदारी के लिए छायावादोत्तर तथा समकालीन साहित्य का विशेष अध्ययन परमावश्यक है।

पाठ्यविषय

छायावादोत्तर काव्य की कालावधि तथा विभिन्न विचारधाराएँ — राष्ट्रीय–सांस्कृतिक चेतना का काव्य, व्यक्तिवादी काव्य, सनेही मण्डल व हालावाद, प्रगतिवादी काव्यांदोलन, प्रयोगवादी काव्य, नयी कविता, समकालीन कविता, नवगीत, अकविता, विभिन्न युग प्रवृत्तियों के प्रतिनिधि कवि और उनकी प्रमुख कृतियाँ। युगबोध एवं शिल्प के नये आयाम।

व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्रश्न हेतु निम्नलिखित कवियों में से किन्हीं ६ कवियों की प्रतिनिधि १०–१० कविताओं का निर्धारण संबंधित विश्वविद्यालय करेगा –

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', हरिवंशराय 'बच्चन', अज्ञेय, मुक्तिबोध, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, भवानीप्रसाद मिश्र, गिरिजाकुमार माथुर, शमशेर बहादुर सिंह, रघुवीरसहाय, कुँवरनारायण, धूमिल।

द्रुतपाठ हेतु निम्नलिखित कवियों में से किन्हीं दस कवियों का चयन किया जाएगा। इनसे संबंधित ५ लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे —

रामेश्वरशुक्ल अंचल, सियारामशरण गुप्त, सोहनलाल द्विवेदी, श्यामनारायण पाण्डेय, भगवतीचरण वर्मा, शिवमंगलसिंह सुमन, त्रिलोचन शास्त्री, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, धर्मवीर भारती, श्रीकांत वर्मा, दुष्यंत कुमार,

विजयदेवनारायण साही, प्रभाकर माचवे, जगदीशगुप्त, शम्भूनाथ सिंह, वीरेन्द्र मिश्र, केदारनाथ सिंह, अशोक वाजपेयी, अरुण कमल, देवराज दिनेश।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३x१० = ३० अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : २x१५ = ३० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
व्यावसायिक वर्ग-१
पत्रकारिता प्रशिक्षण

प्रस्तावना

पत्रकारिता आज जीवन–समाज की धड़कन बन गई है। सिमटते विश्व में स्नायु–तंतुओं के समान काम कर रही है। दैनिक समाचार पत्र से लेकर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक पत्रिकाओं, प्रिंट मिडिया, इलैक्ट्रॉनिक मिडिया, इंटरनेट आदि में इसका विकसित स्वरूप देखा जा सकता है। इसके बिना आज आदमी का रहना कठिन है। साहित्यिकता के साथ–साथ रोजगारपरकता की आकांक्षा की पूर्ति भी इससे होती है। पुनर्जागरण, स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व, नारी तथा दलित जागरण में इसकी क्रांतिकारी भूमिका रही है। अतः इसका अध्ययन आज की अनिवार्यता बन जाती है।

पाठ्यविषय

- पत्रकारिता का स्वरूप और प्रमुख प्रकार।
- विश्व पत्रकारिता का उदय। भारत में पत्रकारिता का आरंभ।
- हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास।
- समाचार पत्रकारिता के मूल तत्त्व – समाचार संकलन तथा लेखन के मुख्य आयाम।
- संपादन कला के सामान्य सिद्धांत – शीर्षकीकरण, पृष्ठ–विन्यास, आमुख और समाचारपत्र की प्रस्तुति–प्रक्रिया।
- समाचार पत्रों के विभिन्न स्तंभों की योजना।
- दृश्य सामग्री (कार्टून, रेखाचित्र, ग्रैफिक्स) की व्यवस्था और फोटो पत्रकारिता।
- समाचार के विभिन्न स्रोत।
- संवाददाता की अर्हता, श्रेणी एवं कार्यपद्धति।
- पत्रकारिता से संबंधित लेखन – संपादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, खोजी समाचार, अनुवर्तन (फालोअप) आदि की प्रविधि।
- इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता – रेडियो, टी.वी. वीडियो, केबल, मल्टी मीडिया और इंटरनेट की पत्रकारिता।
- प्रिंट पत्रकारिता और मुद्रणकला, प्रूफ शोधन, ले आउट तथा पृष्ठ–सज्जा।
- पत्रकारिता का प्रबंधन – प्रशासनिक व्यवस्था, बिक्री तथा वितरण व्यवस्था।

- भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार, सूचनाधिकार एवं मानवाधिकार।
- मुक्त प्रेस की अवधारणा।
- लोक–संपर्क तथा विज्ञापन।
- प्रसारभारती तथा सूचना प्रौद्योगिकी।
- प्रेस संबंधी प्रमुख कानून तथा आचार संहिता।
- प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तंभ के रूप में पत्रकारिता का दायित्व।

अंक विभाजन

३ आलोचनात्मक प्रश्न : ३x१५ = ४५ अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

१५ वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न १५x१ = १५ अंक

पत्रकारिता संबंधी प्रायोगिक कार्य = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
व्यावसायिक वर्ग-२
अनुवाद विज्ञान

प्रस्तावना

सिमटते हुए विश्व में विविध देशी एवं विदेशी भाषाओं के ज्ञानभंडार की जानकारी के लिए अनुवाद की अनिवार्यता असंदिग्ध है। तुलनात्मक–साहित्य, भाषा–विज्ञान तथा विदेशी भाषा–शिक्षण आदि में भी अनुवाद एक कारगर उपकरण के रूप में प्राचीन काल से एक मान्य विधा के रूप में स्वीकृत रहा है। जनसंचार माध्यमों तथा दूसरे आधुनिक विषय क्षेत्रों में भी इसकी उपयोगिता सर्वविदित है। अतः अनुवाद का शिक्षण, पठन–पाठन आज की अनिवार्यता है।

पाठ्यविषय

- अनुवाद : परिभाषा, क्षेत्र और सीमाएँ।
- अनुवाद का स्वरूप : अनुवाद कला, विज्ञान अथवा शिल्प।
- अनुवाद की इकाई : शब्द, पदबंध, वाक्य,पाठ।
- अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि : विश्लेषण, अंतरण, पुनर्गठन।
  अनुवाद–प्रक्रिया के विभिन्न चरण, स्रोतभाषा के पाठ का विश्लेषण एवं उसके अर्थग्रहण की प्रक्रिया, स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना तथा अर्थांतरण की प्रक्रिया। अनूदित पाठ का पुनर्गठन और अर्थ–संप्रेषण की प्रक्रिया। अनुवाद–प्रक्रिया की प्रकृति।
- अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धांत।
- अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार –
  कार्यालयी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी, साहित्यिक, मानविकी, संचारमाध्यम, विज्ञापन आदि।
- अनुवाद की समस्याएँ : सृजनात्मक अथवा साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ,कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ, वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, विधि–साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, कोश एवं पारिभाषिक शब्दार्थ के निर्माण की समस्याएँ, मीडिया क्षेत्र के अनुवाद की समस्याएँ, विज्ञापन के अनुवाद की समस्याएँ।
- अनुवाद के उपकरण : कोश, पारिभाषिक शब्दावली, थिसारस, कम्प्यूटर आदि।
- अनुवाद : पुनरीक्षण, संपादन, मूल्यांकन।
- मशीनी अनुवाद।
- अनुवाद की सार्थकता, प्रासंगिकता एवं व्यावसायिक परिदृश्य।

- अनुवादक के गुण।
- पाठ की अवधारणा और प्रकृति –
  पाठ–शब्द प्रति शब्द
  शाब्दिक अनुवाद
  भावानुवाद
  छायानुवाद
  पूर्ण और आंशिक अनुवाद
  आशु अनुवाद
- व्यावहारिक अनुवाद (प्रश्नपत्र में दिए गए अंग्रेज़ी अवतरण का हिन्दी अनुवाद)

अंक विभाजन :

३ आलोचनात्मक प्रश्न : ३x१५ = ४५ अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

१५ वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न १५x१ = १५ अंक

व्यावहारिक अनुवाद = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
व्यावसायिक वर्ग-३
कोशविज्ञान

प्रस्तावना

'कोशविज्ञान' कोश निर्माण की सैद्धांतिकी के रूप में आज के बहुभाषाभाषी विश्वग्राम में एक अत्यंत उपयोगी शास्त्र है। भाषाविज्ञान के विभिन्न अंगभूत, शास्त्रों और शाखाओं – ध्वनिविज्ञान, लिपिविज्ञान, रूपविज्ञान, अर्थविज्ञान और ऐतिहासिक भाषाविज्ञान के समेकित अनुप्रयोग पर आधारित यह शास्त्र कोश–निर्माण के विभिन्न पक्षों, कोश के प्रकारों, कोश–निर्माण की प्रक्रिया, कोश की समस्याओं आदि से अध्येता को अवगत कराते हुए आवश्यक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

पाठ्यविषय

- कोश, परिभाषा और स्वरूप। कोश की उपयोगिता। कोश और व्याकरण का अंत:संबंध।
- कोश के भेद – समभाषी, द्विभाषी और बहुभाषी कोश, एककालिक और कालक्रमिक कोश : विषय कोश, पारिभाषिक कोश, व्युत्पत्तिकोश, समांतर कोश, अध्येताकोश, विश्वकोश, बोलीकोश।
- कोश–निर्माण की प्रक्रिया : सामग्री संकलन, प्रविष्टिक्रम, व्याकरणिक कोटि, उच्चारण, व्युत्पत्ति, अर्थ (पर्याय, व्याख्या, चित्र) प्रयोग, उप–प्रविष्टियाँ, संक्षिप्तियाँ, संदर्भ और प्रतिसंदर्भ।
- प्रविष्टि संरचना , रूपिम, शब्द और शब्दिम, सरल, व्युत्पन्न और सामासिक, शब्दिम, सामासिक शब्दिम सहप्रयोगात्मक, व्युत्पादक समास, सहप्रयोग और संदर्भ।
- रूप अर्थ संबंध : अनेकार्थकता, समानार्थकता, समनामता, समध्वन्यात्मकता, विलोमता।
- कोश–निर्माण की समस्याएँ : समभाषी, द्विभाषी और बहुभाषी कोशों के संदर्भ में, अलिखित भाषाओं का कोश–निर्माण।
- कोशविज्ञान और अन्य विषयों का संबंध : कोशविज्ञान और स्वनविज्ञान, व्याकरण, व्युत्पत्तिशास्त्र और अर्थविज्ञान का संबंध।
- पाश्चात्य कोश परंपरा, भारतीय कोश परंपरा तथा हिन्दी कोश साहित्य का इतिहास। हिन्दी के प्रमुख कोश और कोशकार।
- स्वचालित सामग्री संसाधन, कंप्यूटर और कोश निर्माण।
- कोश–निर्माण : विज्ञान या कला।

अंक विभाजन :
३ आलोचनात्मक प्रश्न : ३x१५ = ४५ अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक
१५ वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न १५x१ = १५ अंक
प्रायोगिक कार्य (शब्द संग्रह) = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
व्यावसायिक वर्ग-४
पाठालोचन

प्रस्तावना

रचना के मूल रूप का महत्त्व सर्वविदित है। ऐसा देखा गया है कि किसी रचना की कई हस्तलिखित प्रतिलिपियाँ तो उपलब्ध हो जाती हैं पर मूल प्रति का संधान नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में हस्तलिखित प्रतिलिपियों का विवेचन–विश्लेषण करते हुए मूल पाठ का निर्धारणात्मक पुनर्रचना का विधान पाठालोचन से ही संभव बन पाता है। पाठ की प्रामाणिकता, क्षेपक अंशों का निर्धारण, उपलब्ध अंशों के पाठशोधन आदि से पाठालोचन अध्ययन में विश्वसनीयता एवं ज्ञानवर्द्धन में गतिशीलता लाता है। अतः इसका अध्ययन अत्यंत अपेक्षित है।

पाठ्यविषय

खण्ड क : 'पाठ' की अवधारणा -- वस्तुनिष्ठता का संदर्भ, स्वायत्तता का संदर्भ, संरचना का संदर्भ, विन्यास का संदर्भ, साभिप्राय शब्दावली का संदर्भ, अग्रप्रस्तुति का संदर्भ।

'पठन' की पद्धति --पाठ की प्राचीन भारतीय पद्धतियाँ, प्रथम पाठ का प्रकार्य : अर्थबोध, द्वितीय पाठ का प्रकार्य :सौंदर्यबोध

'पाठक' के प्रकार -- अ–साहित्यिक पाठकः त्वरा और आवेग, गैर–साहित्यिक पाठकः साहित्येतर संदर्भों की खोज

खण्ड ख : पाठानुसंधान की समस्याएँ - ग्रंथानुसंधान तथा आधार सामग्री की खोज : संस्थागत–संपर्क, व्यक्तिगत–संपर्क; पांडुलिपियों का वंशवृक्ष निर्माण, पाठ का तिथि–निर्धारण, पाठांतर का अध्ययन, प्रक्षिप्त पाठ की पहचान, पाठनिर्धारण और लिपिविज्ञान, पाठनिर्धारण और छंदोविद्या, पाठानुसंधान में प्रयुक्त प्रमाणावली, लिप्यंतरण की समस्याएँ, पाठ–संपादन, हिन्दी पाठानुसंधान के मानक–ग्रंथ।

खण्ड - ग : पाठालोचन की पद्धतियाँ - पाठ का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन, पाठ का संरचनावादी अध्ययन, पाठ का प्रकार्यमूलक व्याकरणिक अध्ययन, पाठ का रूपवैज्ञानिक अध्ययन, पाठ का विखंडनमुखी अध्ययन, पाठ का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन।

अंक विभाजन :

३ आलोचनात्मक प्रश्न : ३x१५ = ४५ अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

१५ वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न १५x१ = १५ अंक

प्रायोगिक पाठ (व्यावहारिक) = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
व्यावसायिक वर्ग-५
राजभाषा प्रशिक्षण

प्रस्तावना

कार्यालयी–हिन्दी का एक नया स्वरूप इधर विकसित हुआ है। इसका व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त कर लेने पर रोजगार की संभावनाओं में अभिवृद्धि होगी और राजभाषा का स्तरोन्नयन भी होगा।

पाठ्यविषय

- प्रशासन –व्यवस्था और भाषा।
- भारत की बहुभाषिकता और एक संपर्क भाषा की आवश्यकता।
- राजभाषा (कार्यालयी हिन्दी) की प्रकृति।
- राजभाषा विषयक सांविधानिक प्रावधान –

  राजभाषा अधिनियम (अनुच्छेद ३४३ से ३५१तक), राष्ट्रपति के आदेश (१९५२, १९५५, १९६०), राजभाषा अधिनियम १९६३ (यथा संशोधित १९६७), राजभाषा संकल्प (१९६८) (यथानुमोदित १९६९), राजभाषा नियम १९७६, द्विभाषी नीति और त्रिभाषा सूत्र। हिन्दीतर राज्यों के प्रशासनिक क्षेत्रों में हिन्दी की स्थिति। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी। हिन्दी के प्रचार–प्रसार में विभिन्न हिन्दी संस्थाओं की भूमिका। हिन्दी और देवनागरी लिपि के मानकीकरण की समस्या।
- राजभाषा का अनुप्रयोगात्मक पक्ष : हिन्दी आलेखन, टिप्पण संक्षेपण तथा पत्राचार ।
- कार्यालय अभिलेखों के हिन्दी अनुवाद की समस्या।
- हिन्दी कम्प्यूटीकरण।
- हिन्दी संकेताक्षर और कूटपद निर्माण।
- हिन्दी में वैज्ञानिक और तकनीकी पारिभाषिक शब्दावली।
- केंद्र एवं राज्य शासन के विभिन्न मंत्रालयों में हिन्दीकरण की प्रगति।
- बैंकिंग, बीमा और अन्य वाणिज्यिक क्षेत्रों में हिन्दी अनुप्रयोग की स्थिति।
- विधिक क्षेत्र में हिन्दी।
- सूचना प्रौद्योगिकी (संचार माध्यमों) के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी और देवनागरी लिपि।
- भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी का भविष्य।

अंक विभाजन

३ आलोचनात्मक प्रश्न : ३x१५ = ४५ अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

१५ वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न १५x१ = १५ अंक

प्रायोगिक कार्य – (कार्यालयी हिन्दी) = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
व्यावसायिक वर्ग-६
दृश्य-श्रव्य माध्यम लेखन

प्रस्तावना

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गयी है। हिन्दी भाषा और साहित्य का इन माध्यमों में अधिकाधिक स्तरीय प्रयोग तभी हो सकता है जब इन दृश्य–श्रव्य माध्यमों से संबंधित विधाओं का व्यवस्थित प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया जाए। यह पाठ्यक्रम अत्यंत रोजगारपरक है।

पाठ्य-विषय

- माध्यमोपयोगी लेखन का स्वरूप और प्रमुख प्रकार।
- हिन्दी माध्यम लेखन का संक्षिप्त इतिहास।
- रेडियो नाटक की प्रविधि।
- रंग नाटक, पाठ्यनाटक और रेडियो नाटक का अंतर।
- रेडियो नाटक के प्रमुख भेद – रेडियो धारावाहिक, रेडियो रूपांतर, रेडियो फैन्टेसी, संगीत रूपक, आलेख रूपक (डाक्यूमेंट्री फीचर) ।
- टी.वी. नाटक की तकनीक। टेली ड्रामा, टेली फिल्म, डाक्यूड्रामा तथा टी.वी. धारावाहिक में साम्य–वैषम्य। संचार माध्यम के अन्य विविध रूप।
- साहित्यिक विधाओं की दृश्य–श्रव्य रूपांतरण–कला। इलैक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा प्रसारित समाचारों के संकलन–संपादन और प्रस्तुतीकरण की प्रविधि।
- संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित विज्ञापनों की भाषा।
- विज्ञापन फिल्मों की प्रविधि।
- संचार माध्यमों की भाषा।
- हिन्दी के समक्ष आधुनिक जनसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी की चुनौतियाँ।

अंक विभाजन :

३ आलोचनात्मक प्रश्न : ३x१५ = ४५ अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

१५ वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न १५x१ = १५ अंक

प्रायोगिक कार्य–(माध्यमोपयोगी लेखन) = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रश्नपत्र
व्यावसायिक वर्ग-७
भाषा-शिक्षण

प्रस्तावना

भाषा–शिक्षण भाषाकेंद्रित प्रमुख व्यवसाय है। बालक द्वारा भाषा सीखना जितना सहज एवं रहस्यमय व्यापार है, वयस्क–अध्येता को भाषा सिखाना उतना ही जटिल और बहुचर्चित प्रक्रिया। भाषा–शिक्षण का उद्देश्य और स्वरूप, भाषा–शिक्षण से संदर्भित भाषा प्रकारों, भाषा–शिक्षण की प्रणालियों, अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान की विविध प्रविधियों, सहायक साधन सामग्री, भाषा परीक्षण एवं मूल्यांकन आदि का अध्ययन इस जटिल प्रकिया का परिचय प्रदान कर भाषा–शिक्षण तथा अनुषंगतः साहित्य–शिक्षण के लिए आवश्यक सैद्धांतिक पीठिका प्रदान करता है।

पाठ्यविषय

- भाषा–शिक्षण : उद्देश्य और स्वरूप
- भाषा–शिक्षण के सिद्धांत : उद्दीपन–अनुक्रिया पुनर्बलन सिद्धांत, माध्यमीकरण, अंतर्जातक्षमता, संज्ञानात्मक विकास।
- भाषा–शिक्षण के संदर्भ में भाषा के प्रकार : मातृभाषा, द्वितीय भाषा। विदेशी भाषा, समतुल्य भाषा, परिपूरक भाषा, सहायक भाषा, संपूरक भाषा।
- मातृभाषा–शिक्षण और अन्य भाषा–शिक्षण में अंतर। द्वितीय भाषा–शिक्षण और विदेशी भाषा–शिक्षण।
- भाषा–शिक्षण की विधियाँ : व्याकरण–अनुवाद विधि, प्रत्यक्ष विधि, श्रवण–भाषण विधि, अभिक्रमित स्वाध्याय विधि, संप्रेषणात्मक विधि।
- भाषाकौशल और उनका विकास : श्रवण, भाषण, वाचन और लेखन कौशलों का स्वरूप और उनमें योग्यता प्राप्ति के विविध सोपान।
- भाषा–शिक्षण में उपयोगी साधन–सामग्री : औपचारिक भाषा–शिक्षण, नक्शे, चार्ट, चित्र, भाषा–प्रयोगशाला, अनौपचारिक भाषा–शिक्षण, आकाशवाणी, सिनेमा, दूरदर्शन आदि।
- भाषा–शिक्षण और अभिरचना अभ्यास : आधारभूत सिद्धांत और मान्यताएं, अभिरचना अभ्यास की सार्थकता और सीमाएँ।
- व्यतिरेकी विश्लेषण और त्रुटि–विश्लेषण : आधारभूत सिद्धांत और मान्यताएँ, भाषिक व्याघात। व्यतिरेकी विश्लेषण की प्रक्रिया, व्यतिरेकी विश्लेषण की सार्थकता और सीमाएँ।
- त्रुटि–विश्लेषण–आधारभूत सिद्धांत और मान्यताएँ। त्रुटियों के स्रोत–अंतरभाषा की अवधारणा, शिक्षार्थी व्याकरण की संकल्पना और त्रुटि–विश्लेषण, त्रुटि–विश्लेषण की सार्थकता और सीमाएँ।

- भाषा–परीक्षण और मूल्यांकन, भाषा–शिक्षण में निदानात्मक और उपचारात्मक विधियाँ।
- द्वितीय और विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी भाषा–शिक्षण।
- हिन्दी उच्चारण, वर्तनी और व्याकरण का शिक्षण।

अंक विभाजन :

३ आलोचनात्मक प्रश्न : ३x१५ = ४५ अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक

१५ वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न १५x१ = १५ अंक

प्रायोगिक कार्य–हिन्दी पाठयोजना = २० अंक

एम. फिल्. (हिन्दी)
पाठ्यक्रम

एम. फिल्. पाठ्यक्रम

प्रस्तावना

विश्वविद्यालयों/शोध संस्थानों का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रदेय है—शोध—कार्य। इस शोध—कार्य को व्यवस्थित करने के लिए एम.फिल्. पाठ्यक्रम के अंतर्गत शोध—प्रविधि का विधिवत् प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत ऐसे पाठ्य विषयों का समावेश किया जा रहा है जो शोधार्थी के लिए आवश्यक हैं, किंतु जिनका संज्ञान उसे पहले नहीं कराया जा सका है।

पाठ्यविषय

इस पाठ्यक्रम में दो सैद्धांतिक—प्रश्नपत्र, एक प्रस्तावित शोध—कार्य से संबंधित प्रश्नपत्र, एक लघु शोध—प्रबंध—लेखन और मौखिकी का प्रावधान किया गया है। संपूर्ण परीक्षा ५०० अंकों की होगी। इसकी अवधि एक वर्ष रखी गयी है। संपूर्ण योग में ५५ प्रतिशत से कम अंक पाने वाले विद्यार्थी पी.—एच.डी. शोधोपाधि में प्रवेश पाने के लिए अर्ह नहीं होंगे।

एम.फिल्

प्रश्नपत्र–१ अनुसंधान की प्रविधि और प्रक्रिया।

१. अनुसंधान का स्वरूप।
२. अनुसंधान और आलोचना।
३. अनुसंधान के मूल तत्त्व।
४. अनुसंधान के प्रकार।
५. विषय–निर्वाचन।
६. सामग्री–संकलन : हस्तलेखों का संकलन और उपयोग।
७. शोध–कार्य का विभाजन, अध्याय–उपशीर्षक और अनुपात।
८. रूपरेखा, विषय–सूची, प्रस्तावना, भूमिका, सहायक ग्रंथों की सूची, संदर्भ–उल्लेख, पाद–टिप्पणी।
९. साहित्यिक अनुसंधान में ऐतिहासिक तथ्यों और पद्धतियों का उपयोग।
१०. साहित्यिक अनुसंधान में समाजशास्त्रीय प्रविधि का उपयोग।
११. हिंदी अनुसंधान के संबद्ध विषयों की भूमिका।
१२. पाठालोचन के मुख्य सिद्धांत।
१३. भाषावैज्ञानिक–अनुसंधान।

एम.फिल्.
प्रश्नपत्र–२
हिन्दी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि

पाठ्यविषय

विचारधारा और साहित्य
मध्ययुगीन बोध का स्वरूप
विभिन्न धर्म साधनाएँ और वैष्णव धर्मान्दोलन
मध्ययुगीन–बोध और आधुनिक–बोध में साम्य–वैषम्य
आधुनिकता–बोध और औद्योगिक–संस्कृति
राष्ट्रीयता और अन्तरराष्ट्रीयता
पुनर्जागरण, पुनरुत्थान और हिन्दी लोक–जागरण
हिंदी साहित्य में संबद्ध विशिष्ट मतवाद–अध्यात्मवाद, गाँधीवाद, मार्क्सवाद, धर्म, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, अन्तश्चेतनावाद, उत्तर–आधुनिकतावाद
परम्परा और आधुनिकता
राष्ट्रीय स्वातंत्र्य आंदोलन
भारतीय सांविधानिक व्यवस्था–लोकतंत्र, समाजवाद, पंथनिरपेक्षता, दलित–चेतना, स्त्री–विमर्श
आंचलिकता और महानगर बोध
साहित्य का अंतर्विधापरक अध्ययन–साहित्य का समाजशास्त्र, इतिहास–दर्शन, मनोवैज्ञानिक अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन, भाषा वैज्ञानिक विवेचन, भाषा प्रौद्योगिकी, साहित्य का वैज्ञानिक बोध

एम.फिल्.
तृतीय प्रश्नपत्र
शोध-आलेख

इस प्रश्नपत्र के अंतर्गत निम्नलिखित वर्गों में से किसी एक वर्ग से संबंधित विषय पर गहन प्रश्न किए जाएँगे। इसका अध्यापन विभागीय विषय विशेषज्ञ द्वारा कक्षाध्यापन या सेमिनार के रूप में किया जाना चाहिए। विषय का आबंटन विभागीय व्यवस्था के अंतर्गत किया जाएगा। इसी विषय का परिविस्तार करके विद्यार्थी चतुर्थ प्रश्नपत्र में निर्धारित लघु शोध–प्रबंध प्रस्तुत करेगा और यदि वह पी.–एच.डी. करना चाहे तो इसी विषय को विस्तारित करके पी.–एच.डी. उपाधि हेतु शोध–प्रबंध भी प्रस्तुत कर सकता है। प्रत्येक विश्वविद्यालय से अपेक्षा की जाती है कि वह इन वर्गों से संबंधित सेमिनार/प्रशिक्षण की सम्यक् व्यवस्था करेगा–

१. आदिकालीन हिंदी साहित्य
२. मध्यकालीन हिंदी साहित्य
३. आधुनिक हिंदी साहित्य
४. लोक–साहित्य तथा जनपदीय साहित्य
५. भाषाविज्ञान एवं प्रयोजनपूलक हिंदी
६. काव्यशास्त्र तथा समीक्षा सिद्धांत

यह आवश्यक है कि शोध विषय का चयन उपयोगिता एवं मौलिकता के आधार पर किया जाए और विद्यार्थी के मार्गदर्शन हेतु विशेषज्ञ प्राध्यापकों का निर्देशन सुलभ कराया जाए। कक्षाध्यापन/सेमिनार की उचित व्यवस्था उपेक्षित है।

इस शोध आलेख का मूल्यांकन उत्तर पुस्तिका के रूप में १०० अंकों में से किया जाएगा।

एम.फिल्.
चतुर्थ प्रश्नपत्र

इसके अंतर्गत लगभग १०० (सौ) टंकित पृष्ठों का लघु शोध–प्रबंध परीक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाएगा। विषय का आबंटन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा किया जाएगा। विभाग ही विशेषज्ञ/निर्देशक की व्यवस्था करेगा। इस लघु शोध–प्रबंध का मूल्यांकन १०० अंकों में से बाह्य विशेषज्ञ परीक्षक द्वारा कराया जाना अभीष्ट है।

एम.फिल्.
पंचम प्रश्नपत्र : मौखिकी

१०० अंकों की यह परीक्षा एक बाह्य और एक आंतरिक परीक्षक (जो निर्देशक भी हो सकता है) द्वारा सम्मिलित रूप से ली जाएगी। परस्पर सहमति न होने पर दोनों परीक्षक ५०–५० अंकों में अपना पृथक्–पृथक् मूल्यांकन कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में परिणाम दोनों के योग से बनाया जाएगा।